ॐ नमो विघ्नहर्त्रे ॥ श्रीरघुनाथो जयतितराम् ॥

अथ स्वराध्यायसूचीपत्रम् ॥

सूची-१

सूची

स्वराध्या० । अथ रागाध्यायः कथ्यते

रागाध्या ॥

अब संगीत के आद में ईश्वर के चरणार विंद को।
नमस्कार करता हूं। कैसा है ईश्वर जिसकी माया
में येह जगत विलसित क्या प्रकाशित अनेक प्र
कारके नाम रूप से दृश्यहो रहा है इसके अंत में
क्या प्रलय समय में जब कार्य कारणों में लीनहो
जातेहैं तब जो शेष रहिता है सो सच्चिदानंद स्व
रूप सत्य पूर्ण ब्रह्म है जिसको योगाभ्यासी जो त
त्वों में निपुण हैं सो तत कहिते हैं आस्तिक शिवतत

रा०सं०
१

रमाद्वैतस्यभावः इसका येह अभिप्रायहै एक ऐसा
अलख रूपहै जो संपूर्ण द्वैत के नाशके पीछे ।
स्थिर सत्य चैतन्या नंद स्वरूप (रहताहै) परंतु मनवानी का

यदाविश्वंविश्वंप्रलयसमयेऽसद्विलसितं । चिदानंदंसत्यंतदितिविदितंतत्त्वनिपुणैः ।
ततोऽशब्दंवीक्षेहृतिमहृदहोभातिसकलं । तमीशानंवंदेप्रणतसुखदंदुःखशमनम् १।

अविषयरहिताहै क्योंकि येह लिखाहै भागवत में । नै
तन्मनोविशतिवागुतचक्षुरात्मा प्राणेंद्रियाणिचय
थानलमर्चिषःस्वाः शब्दोऽपिबोधकनिषेधतयात्म

एकोऽहं बहु स्यामिति
श्रुतिः

मूलमर्थोक्तमाहयद्वतेननिखेयासिद्धिः। सोईस्वर ज्ञा
न गम्य है। ततः क्या प्रलय कालतें उपरंत सो ईस्व
र अप्रापद्ध जो प्रधान है तिसकों जगत् की उत्पत्तीः की
इच्छा कर देखता है तब फिर उसी तरांका जगत्।
उत्पन्न हो जाताहै बडा आश्चर्य उसकी माया सें भा
सता है ऐसा जो परमेस्वर है तिसकों प्रणाम होवे
फिर कैसाहै अपने जो प्यारे भक्तहै नम्र हूवे हूवे।
उन कों स्राव के देने वालाहै कैसा स्राव जो ब्रह्म।

तं स ऐक्षत लोकान्
सृजेतेति श्रुतिः

द्वि॰सं॰ वेद साख प्रतिपादित है जिसके देने वाला है अरु जो
२ संसार है जिसके अज्ञान जन्य जो दुःख हैं उनके दूर
करणे वाला है क्यूं जो गीता में श्री कृष्ण जी ने आ
ज्ञा करी है। मामेव ये प्रपद्यंते मायामेतां तरंति ते।
जो भक्ती में मेरी शरण को प्राप्त होंगे सोई कभी
माया को भीतर जावें गे।

र॰ सं॰ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॐ देवेंद्रेति श्रीरामः श्रीरणवीरसिंहनृ
१ पतेः वल्लको भवेदित्याशीः कथंभूतस्य प्रभोः राज्ञः अर्थान्न
3 देशस्य॰ पुनः कथंभूतस्य धर्मास्पदस्य॰ कुतोहरवहः शालिग्रा

ॐ देवेंद्रारिविमर्द्दकारिविलसत्कोदण्डपाणिर्जगत्त्रयो
नान्वयवारिजातनिकरे मित्रः प्रमोदप्रदः ॥१॥ ऽऽ ॥ १

मनर्मदेश्वरपार्थिवकल्पार्च्चनरामनामलेखनजपहवनादि
सत्कर्मानुष्ठानकरणात्वात् तदुक्तं गीतासु॰ यद्यदाचर।
ति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरोजनः सयत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुव

नैतेऽनेनैनेवधर्म्मास्पदत्वम् श्रीरामः श्रियासीतयायुक्तोरा
मः श्रीरामः पुनः कीदृशः देवानामिन्द्रः देवेन्द्रः तस्यअ
रयः शत्रवः राक्षसाः रावणादयः तेषांविमर्द्दकारिविलस

श्रीरामोत्रजगत्त्र्यवाहजमत्रैवैःसेव्योभवेद्रक्तकः
श्रीमच्छ्रीरणवीरसिंहनृपतेर्द्धर्म्मास्पदस्यप्रभोः १

त्कोदंडपाणिः यस्यधनुर्द्धारणेनस्वभक्तशत्रुनाशः प्रतीय
ते पुनः कीदृशः जगत्प्रद्योतः सूर्य्यस्तस्यान्वयः सूर्य्यवंशी
यराजकुलम् वारिजातनिकरे कमलसमूहे मित्रः सूर्य्यः

र·से· तद्वत्प्रमोदप्रदः प्रमोदो विकसनमानन्दस्तं प्रकर्षेणाद
५ दातीति प्रमोदप्रदः यद्वा· सूर्य्यान्वय। एव वारि शुक्लो मह
ह्रदः त्वत्प्रवेशः तज्जातकमलनिकरं राजकुलम् कुतः
सूर्य्याद्वृष्टिस्तस्माद्ध्रदः सूर्य्ये तेन ततः कमलोत्पत्तिः सूर्य्ये क
मलप्रीतिः प्रसिद्धा गर्गसंहितायां श्रीकृष्णवाक्यं गोपीनां·
यो यस्य चित्ते वसति तन्मध्ये कदाचन· विवस्वतः कमलं प्रेमो
द्दिष्टं संस्फुटति प्रियं· तथा सूर्य्यस्यापि कमले प्रीतिमदास्त्वक
रधारणत्वात् तद्वत्प्रवस्यां प्रीतिस्तस्मात्प्रमोदप्रदत्वम् अतः

कीदृशः रामात्तजोलक्ष्मणः गन्धवाहोवाउस्तस्यात्मजो
हनुमान तत्प्रभवः सर्वेन्तुचरास्तैर्सेव्यः १॥ श्रीसीतेति०।
श्रीमच्छ्री १०८ रणवीरसिंहनृपतिर्वाहादुरजीसिपेसश्रा

श्रीसीतापतिपादकंजयुगले भृंगोलसत्प्रीतिमच्छ्रीमच्छ्रीरणवीरसिंहनृपतिर्व्वाहादरो
जीसिप्रुक पेसायीन्द्रमहेन्द्रराज्यसिपरःकाश्मीरजम्बादिपः जीयात्पुत्रकलत्रमित्रसहितः
संपालयन्मेदिनीम् २॥

यी इंद्र महेंद्रसिपरसलतनत काश्मीरजम्म्ब आदिदेशपति
जीयात सर्वोत्कर्षेणवर्तेततस्यजयोभवात· कथंभूतः सः
पुत्र मित्र कलत्र सहितः पुनः कथंभूतः श्री शोभा तयुक्ता

नारिननविकादः
श्रीमच्छ्रीरण
वीर सिंहेत्यार
ध्य काश्मीरजम्बा
दिप इत्यनंनाम
नाक्षिन् राजपति
परेतिपदेसांके
तिकम्

र॰ सं॰ सीता श्रीसीता तस्याः पतिः श्रीसीतापतिः तस्यपादपङ्कं।
५ जः पादकंजः पादकंजयोर्युगले पादकंजयुगले त
5 स्मिन् उल्लसन् प्रीतिमान् भृंग इव॰ किंकुर्वन्॰ ३

खिन्नागानसरस्वतीक्षितितले स्वेच्छाचरान्तद्दौरे भंगनाट्ट्या समगीतशास्त्रविरहाच्छिन्नानिजा
र्थैरनान् दृष्ट्वा श्रीरणवीरसिंहनृपतिं त्राणार्थमभ्यागमच्छ्रीजम्बूपुरवासिनी हृत्खिनालब्धा
दरपात्रमा ३॥

३ मिथ्यादिरूपेण मेदिनीं पृथ्वीपालयन् सन् जीयात्॰
कुत आत्मावैजायते पुत्रः २ खिन्नेति॰ हे नृपते त्वां
गानसरस्वतीपात्र कीदृशा गानसरस्वती॰ स्वेच्छाच

गतत्वै र्यो भगवांगा कृता। स्वेच्छया चरंतीति गातप।
थमित्यध्याहारः इति स्वेच्छाचराः स्वेच्छाचरा एवानत्त्वरा १
नदृष्टानि संगीतात्त्वराणि येस्ते स्वेच्छाचरानत्त्वराश्रुति
यमत्त्वात्तैः यतोनकुत्रापि संगीतग्रंथेषु जिह्वला रागो।
लिमः प्रभृत संगीत नारायणो। स्याद्वाग संमिश्रक इ
तिदोषो लिमश्राप्रतिकशिगामिल्लैच्छैर्गीयते श्रदोषप
वत्त्वात्वाऽतोगानसरस्वतेरंगमभग इति सिद्धम तेन विना
ज्ञातांसा विना विज्ञाविद्वांस एव संगीतंमानंतीति ।

र॰ सं॰ स्वात्पानन्यार्थं स्वात्म रक्षार्थं गता तोस्य निजार्थं
६ रतान्दृष्टो व्याकरण काव्य कोश न्यायादिष रता
6 न दृष्ट्वा॰ श्रीमच्छ्रीमहाराजाधिराजरणवीरसिंह
न्रुपतिवत्तः षष्टिकलाभिज्ञेन न्यायार्थमत्र जेहू श्रुता
पुरेऽगमत कस्मात सम्यगीत शास्त्रविरहात स
मंचेमंगीतशास्त्रम सम्यगीतशास्त्रम तस्यविरहत्त
स्मात तउक्तम संगीते श्राचार्याः सममिच्छंति पद
च्छेदंत पंडिताः स्त्रियोमधुर मिच्छन्ति विकुष्टमितरे

जना इत्यनेनाचार्येणोक्ता समग्रीतमेवश्राव्यंगानं तद्विद
ह्यातः तैर्महाराजभिरित्युक्ते तवन्यायं करिष्यामो नोऽत्र
जंबूद्वीपे निवासिता नयालब्धादराकृता अनेकरागानिवं
येभ्यस्तथा ध्वनिकगुणिसंप्रदायानकरोयेनत्तत्तनग्रंथक
रणार्थमाज्ञा दत्ता नयालब्धादरा जाता तेन सुखिता जाता
न्याय प्राप्त्या संसर्गीणी जाता ते प्रमुदिता नना त्वं पा
तु ४ ॥

र० सं०

७

7

श्रीमच्छ्रीति० अहं संगीताचार्यः गोस्वामि काकारामः आह

ते नादे गीत वाद्य नृत्यादिक विधाने० संगीतं श्रीरणवीर संगी

त महोदधि संज्ञमातनोमि० किम्भूते स्वखेदे किंकृत्वा० सोहं

श्रीमच्छ्रीरणवीरसिंहनृपतेर्यन्मानमादौमयाप्राप्तंतद्वतयैवजंबुनगरेश्रीरामसिंहाभिधात् सो
हं सोहमनृपविशपतिनदं नादाब्धिसंपत्तये तन्नादाहतमातनोमिस्वखेदे संगीतसंज्ञम्मुदा १॥

सोहं मनाहमादे श्रुत्वा० एकाग्रहृत्याकृत्रिम स्वर तालब्रह्म रूपं

ज्ञात्वा तदनुसारेण प्रविश्य० कस्यै नादाब्धि संपत्तये किंच ग्रंथा

दौ ग्रंथ प्रारम्भ समये० यन्माने श्रीमच्छ्रीरणवीरसिंह नृपतेः

सकाशात् जंबुपुरेमयाप्राप्तम् तदेव तत्कृत श्रीमच्छ्रीराजारा

सरोसस प्रथम क्र पिद [illegible] ॥

श्रीरस्तु सूचना विदित हो कि श्रीमच्छ्री १०८ महाराजाधि
राज जंबूकाश्मीराद्यनेक देशाधिपति श्रीमहाराजा रणवी
रसिंहजीकी आज्ञानुसार वडे परिश्रम सें येह रणवीर
सिंह संगीतमहोदधि वनाने का प्रारंभ हुवाथा· संवत् १९
३९ आ· १५ फिर उनोंके वैकुंठ वास होनेके कारण सें अट
क गयाथा· अब परम प्रवीण महाकारुणिक श्री १० रा
जाधिराज श्रीराजारामसिंह वाहादुरजीकी आज्ञानुसार
वडेपरिश्रमसें अनेक संगीत ग्रंथों सें एकत्र कर संपूर्ण

२

र· सं

8

ऊवा· संवत् १९ ४९ वैशाख प्र· संगीताचार्य गोस्वा
मिकाकाराम ने यथामति बनाया· जिसमें पंडित
स्हजां· और कलावंत इमा वषश· तथा अनैतषां वीण
कार तथा स्नुरादषां कालेषां उलावषां इत्यादिक अने
क ये· इनकी अल्प मतिसें बनाया· गया·

इतिविज्ञप्तिः

रा०सं० २

ॐश्रीगणेशायनमः श्रीराधाकृष्णाभ्योनमः अथराग
समुच्चयप्रारंभः ॥ अब सब विद्या में उत्तम जो रागवि
द्या तिसके बनवानेका उत्साह हुवा श्रीमच्छ्री १०८
राजाधिराज श्रीमहाराजा रणवीर सिंहजी को तिं
न्होंकी आज्ञा करके प्रेरित जो ग्रंथ कर्ता हूं सो इस
समुद्र रूपी ग्रंथ बनावने में ऐसा मानता हूं। का
हे मेदमत क्वेदं मथनेक्षीरवारिधेः किंनत्वपरमा
णवै यत्नमजानिमे दवः १ इसका एह अर्थ है एह

श्रेरतु

रा० २

संगीतका ग्रंथ तो क्षीर समुद्र रूपीहै और मैं मंद जैसी बु
द्धि वाला परमाणु सदृश हूं जिस क्षीर समुद्र के म
थन में देवतयों से मंदरा चल डूबि गयाथा उसके
आगे परमाणुकी क्या गिनतीहै तो इसमें दो प्रका
रका धीर्य्यहै एक तो येह है ॥ मूकं करोति वाचालं
पंगुं लंघयते गिरिम् यत्कृपा तमहं वंदे परमा-
नंद माधवम् २ ॥ और सूरदास जीने भी इसी अभि
प्रायका विष्णु पद कहाहै । रागकौसीया० । ताल० ३

रा॰मं॰
२

वंदौं श्री हरि पद सुख दाई। जाकी कृपा तें पंगु गिरि
लांघे। अंधरे कों सभ कछु दरसाई। बहर सुने गूंगा
फुन बोले रंक चले सिर छत्र छुराई। सूरदास प्रभु
की शरण गत बारं बार नमो तें पाई।१। एक तो
येह आश्रय है अर हमरी श्रीमन्महा राजा जीकी म
हायिता रूपी कृपा में कछु आश्चर्य नहीं है। अब इ
सी वास्ते आद में मंगला चार रूपी प्रथम श्लोक का
अर्थ करता हूं। श्रीकृस्न मिति श्रीस्वरूपी जो आया श॰

जिसका नाम श्री
रणबीरसिंह संगीत
[illegible] है-

कि जो लोक धाम हुआ मणि श्री राधिका जी हैं तिन क
र युक्त जो कृष्ण परमात्मा हैं तिना कों नमस्कार करके
इस राग समुच्चय ग्रंथका प्रारंभ करनी हूं कैसे हैं राधा
कृष्ण इस जगत् की जो उत्पत्तिः अरु स्थिति का पालना
करणी अंत में लय का प्रलय कर आपणे में लीन क
रणा इन तीनों कर्मों के हेतु का कारण हैं और उत्प
न्न कीया जो जगत् तिसकी मूल प्रकृति जो अविद्या
शक्ति तिसतें उत्पन्न हूवे जो सत्व रज तम तीन गुण

रा॰सं॰ ३ इन के अधीन जो मन सो जब राजस अर तामस हो
जाता है तो अत्यंत चंचलता में स्थिर नहीं होता और
महा क्लेश पावता है सतोगुण के अभाव में अर सतो
गुण की वृद्धि तब होती है जब सात्विक पुरुषों की से
वाती हो और सात्विक वस्तु खाने में पेहन नें में वर्तने में
आवे अर सात्विक वस्तु वोह होती है जिसको विस्नुजी
के भक्त जो वृद्ध हैं सो बहुत अच्छी कथन करें जिस
को निंद देवें सो तमो गुणी होती है अर जिसको उपे

ता कर छठे सो रजो गुणी होती है श्रीमद्भागवत में लि
खा है सात्विका नेव सेवेत् प्रमान् सत्व विहृ ह्वये । स
त्वाद्धर्मा भवेत् प्रेसो धर्मो मद्भक्ति लक्षिणः । इसी वा
स्ते श्रीकृष्ण जीने भक्त जनों के ऊपर बड़ाही उपका
र कीया अत्यंत चंचल मन के स्थिर करणे का साध
न विचारा तब राग और रागिणी और उनके पुत्र पौ
त्रादि उत्पन्न कीये जिनों में सदा नंद ब्रह्म स्वरूप आ
पना स्थापन कीया विष्णु पद गावने वालेकी और ।

श्रवण करणे वालेकी वृत्ती सतो गुणी होकर एका॰
कार मेरे में लग जावे सो इस वासते राग उत्पन्न की
याहै जिन्होंने ऐसे परम दयालु श्रीकृष्ण जी कों नम॰
स्कार करके हमरा जगत कों रंजन करणा का प्रस
दिन करणा आनन्द जगत् के क्लेश निवृत्त करण वा
सते उत्पन्न कीयाहै राग जिन्होंने तिनकों प्रणाम कर
के उनों की कृपा सें इस ग्रंथ कों यथा मति रचना ङ्रे स्मर
जंबू नगर काश्मीराद्य नेक देशाधि पति श्री १०८ राजा

प्रवृत्त

पि राज श्रीमहा राजा रणबीर सिंह जी की कृपानूप
आज्ञा करके प्रेरिया होया इस ग्रंथका प्रारंभ करता
हूं कैसाहै येह ग्रंथ बहुत लालितहै अति शय करके।
सुंदरहै। अर विद्वजन जो इस विद्या कौं अछी तरां सैं
जानते है जिनकौं तत वितत अर घन सुसिर क्या त
त् वीणादि तंतमय साज अर वितत मृदंगादि चर
म कर मढा होया अर साबिर तली बंशी इत्यादिक
फूंक के साज अर घन कैंसी खुंगरू छैना इत्यादिक।

रा॰सं॰ साज इनका बजाना जानता हो अर कंठ सेंभी गावना
५ जानता हो अर संगीत विद्या जो स्वरके प्रकार है सु
छंना सरना ताल लय इन में प्रवीण हो और नायका

श्रीकृष्णे जगदुद्भव स्थिति लये हेतौ जगद्भ्रस्तुना यीयो ऽन्यादित राग रागरमणी नसुत्र॰
पौत्रा दिकम्॥ नत्वा श्री रणवीर सिंह नृपते राज्ञा वशा न्नेरितः कुर्वे राग समस्तुयं सल
लिते विह ज्ञनानां मदे॥ २॥ १ ॥ ग्रंथकर्त्तुर्वचनः

भेद अलंकार अर रस भेद कों भी जानता हो अर नृत्य।
के जो हाव भाव कटाक्ष उनकों भी समझना हो क्या
इनकी भी परीक्षा हो जिसकों अर व्याकरण छंदो ग्रं

२५

ष भी पड़ा हो सब अब पद विस्तु पद ग्रहपदी इत्या
दिकों के अर्थ करणे की समर्थ हो अर् नूतन पद
रचने कों भी समर्थ हो क्या कविता भी करणी जा।
नता हो अर परमेश्वर में भी प्रीति हो जिसकी ऐसा
गुणों करके जो संपन्न हो तिसकों इस संगीत शा
स्त्र में विद्व जन जानना तिन्हों की प्रसन्नता के वास
ते। १। अब येह विद्या सरस्वती की कृपा विशेष।
नही प्राप्त होती इस वासते सरस्वती जी कों नमस्का

रा॰सं॰
६

र करता है कैसी है सरस्वती अपनी बीणा विषे व्यग्र है ॰
हस्थ जिसका अर्थात बीणा बजाने में डिगिये अंगुली
यो होती हैं सो एक हाथ ऐसा है जिसका और इसविद्या

ग्रंथा
व्यग्र हस्तो स्व वीणायो पुस्तका भय वरा न्विताम् सरस्वती
मऽहं नौमि नारद ते वर्द्ध न्विताम् ॥ २ ॥ २ ॥

के आवरण का एक हाथ से वरदे रही है और एक हाथ
में पुस्तक लीया होया है और चौथे हस्थ में निज भक्तो
को अभय दे रही है उनको जो सब प्रकारका भय है उ

सं॰ ६

म कों हर कर रही है फिर कैसी है नारदजी जो भक्त
जनों के शिरोमणि है और तुंबरूजी जो गंधर्वाधिप
हैं तिन दोनो करके युक्त है ।२। अब येह जो संगीत
शास्त्र है श्री के स्वामी जो श्रीपति हैं तिन में चित्त की

चित्ते काग्र करं श्रीशे भक्तानां भक्ति साधनम् बालाना मपि बोधाय कुर्वे संगीत संग्रहम्
॥ ३ ॥

वृत्ती कों एका कार करके लगावनेका भक्तों कों पर
म साधन है अर भक्ति के भी दृढ करणे वाला है ऐसे
संगीत शास्त्र का मैं संग्रह कर्ता हूं बालकों के वासते

रा॰सं॰ ७

जिस प्रकार से जो बालक है उनको भी बोध हो जावे इस राग विद्या का। ३। अब जो विस्त भक्ति करके युक्त पुरुष हैं अर जो इसके प्रीती पूर्वक सुनने वा॰ ले भी हैं उन कों येह गान शास्त्र का गायन करणा

विस्त भक्ति युतानो हि श्रोतृणां प्रीति पूर्वकम्। गान मेव परं श्रेयः भक्ति मोक्ष क साधनम्। ४॥

परम कल्याण करणे वाला है अर भक्ति मुक्तिका तो परम साधन है, जैसा राग है एका कार वृत्ति के अभा इस थी विना गैर ऐसा साधन नही है:
व में। ४। अब येह जो नाद रूपी ईश्वर है तिसको मेरी॰

७

7

आगामहै फिर कैसाहै येह नाद जिनों लोकों की वि
षयों करके खैंची होई भी वृत्तीहैं अर संसार में जि
नों का मन बहुत सक्तहै कभी एका कार नहीं होया
ऐसेयों के मनकी वृत्ति भी नाद जन्य राग के सुनने

विसृः। विषया कृष्ट वृत्तीनां संसारे सक्त मानसां। एका कार करे वृत्ते नाद मीशं न
मामयहम् ५ ॥

में एका कार वृत्ति हो जातीहै ऐसा अत्यन्त शक्तिमा
न रागहै तिसको हमारी नमस्कार होवे। ५। और
जो महा जड पुरुष है अर जो सर्पा दिक कीटभी हैं

ग्रं॰सं॰ ८
8

अर पशु पक्षी बालक इत्यादिक यद्यपि नासमझी हैं अर
नतो गुण करके ना क्रोध करके खिन्न भी रहिते
हैं परंतु जब रागकी अच्छी ध्वनि उनके श्रवण में परे
तब एकाग्र होजाते हैं अर आनंद में लीन हो जाते हैं

महा जडानां सर्पाणां पशूनां पक्षिरक्तसाम्। नमसा खिन्न वृत्तीनां संगीतं भक्ति साधनम्
॥६॥

अर इसी स्वर ब्रह्म में मग्न रहें तो भक्ति भी हो जाती है
अर भक्तिका परम साधन यही है।६। भक्ति नवधा है
प्रथम भक्ति विष्णु यश श्रवण करणा।१। दूसरी भक्ति

प्रेम पूर्वक गायन करणा।२। तीसरी नाम स्मरण कर
णा।३। चौथी महात्मा पुरुषों के चरणों की सेवा कर
णी।४। पांचवीं अर्चन क्या सालिग्राम वा मूर्त्ति परमे
श्वर की का पूजन करणा।५। छेवी परमेश्वर के मंदि

अथ नवधा भक्तिः श्रवणं १ कीर्तनं २ विष्णोः स्मरणं ३ पादसेवनम् ४ अर्चनं ५॥

रों में दंडवत् प्रणाम करणी।६। सातमी अपने अभिमा
न को छोड कर आपको परमेश्वरका अथवा परमे-
श्वरके भक्तों का दास समझना।७। आठमी सभ जी

रा॰सं॰ ५ वा के साथ मित्रता करणी किसे के साथ द्वेष नहीं क
रणा अथवा परमेश्वर में मित्रता करणी ।८। अर अप
ना सर्वस्व परमेश्वर में निवेदन करणा सहित शरीर
के येह नवमी भक्ति है ।९। येह नौ प्रकार की भक्ति ।

वंदनं ६ दास्यं ७ साख्यं ८ मात्म निवेदनम् ९ कलौ तु कीर्तनस्य कीर्तनं श्रवणं स्यापि
प्रधानता ॥७॥

में कीर्तन रूपी जो गायन भक्ति अथवा श्रवण भक्ति
ये दोनो भक्तियो में मुख्य है चित्त की एकाग्रता में ।७।
अब जानना चाहिये जो येह विद्या परंपरा में चली ।

ग्रातीहै ग्रौर ऋषि लोक जो महात्मा योगाभ्यासी थे

उनों की है जैसे वाल्मी कि जीने गावना ग्रर बीणा

का बजाना सिखाया लव ग्रर कुशजी कों उन्हों ने श्र

वण कराया श्रीरामचंद्र जी कों ग्रौर भरत ऋषिजी इ

सी विद्याका ग्रभ्यास करते रहे ग्रौर भरत मत्त स्थाप

न किया ग्रौर श्रीनारद ऋषिः जो ब्रह्म पुत्र थे उन्हों

ने इसी विद्या कों ग्रहण किया पंच सहस्त्र वर्ष तप क

र श्री सरस्वती जी कों प्रसन्न कीया ग्रौर येही विद्या मो

र० सं०
१०

10

गी इसी विद्या में परमेश्वर की भक्तिका आनंद यावज्जी
वन तक लेकर येही निश्चय कीया जो जगत में जिस
ने भक्तिका आनंद लय कर भक्त होना होवे सो इसी
विद्याका अभ्यास करे सबरही ब्रह्महै उसीका ध्यान ९

अथ गाने श्रुति प्रमाणम् ॥ वीणा वादन तत्ववेदी श्रूयते ॥ ८ ॥ ॥

करे तो मुक्ती भी हो जाती है इस में वेदकी श्रुती प्रमाण
न येह कहती है वीणा वादन कर्म युक्त भक्त तत्ववे
त्ता अर्थात ज्ञान वान् होताहै येह बात भी श्रवण करी

१०

दीहै ।८। अब याज्ञवल्क्य जी की स्मृति येह कैहती है
वीणा के बजावने का जो तत्व है क्या बहुत मनकी
वृती को पवित करके स्वर रूपी ईश्वर में युक्त होना
जो जानता है और स्वरकीयां जातीयां जो बारां १२

याज्ञवल्क्य । मिताक्षरायां । स्मृतिः ॥ वीणा वादन तत्वज्ञः श्रुति जाति विशारदः ॥
तालज्ञश्चा प्रयासेन मोक्षमार्गं नियच्छति ५॥

विकृति इन को ऐसी तरें से लगाता हो जैसें यथार्थ रहे
इन में चतुर होवे तालज्ञः अर्थात् गीत के प्रमाणके
समय को भी जानता हो उस को आयास थी बिगेरही

मकी प्राप्त होतीहै इसमें वेदांती प्रश्न करता है ऋतेज्ञा
नान्न मुक्तिः ज्ञान थी बिना मुक्ति नही होती कैसे बी॰
णा के बजाने करके हो जावेगी इसका उत्तर प्रथम ज्ञा
न समाधी में यथार्थ होताहै सो समाधि इंद्रियों की बा

आनंद स्वरूपो ब्रह्म न्याहू॥ एषःएवा नन्द यती ति श्रुतिः १०॥

ह्य वृत्ति कों रोक कर अभ्यंतर वृत्तिः कछुये के अंगो॰
के संकोच की न्याई होने से होतीहै तैसें ही सरना॰स
रंगीना॰स्वर॰ताल॰लय इन के बिगडने के भय सें वि

न बाहर के संकल्पों की वृत्ति को छोड़ कर अभ्यंतर।
आनंद स्वरूप ब्रह्म में स्थित होजाता है आनंद ही
ब्रह्मका स्वरूप है जो मुक्त होतेहैं सो आनंद स्वरूप।
में लीन हो जातेहैं एसी ही वृत्ति वीणा वादन करके

कलौ न सर्व साधने षु साधन आधान्यता माह। कलौ संकीर्त्य केशवम् ॥११॥

मुक्त जो परमेश्वर का भक्त तिसकी होतीहै और जो।
जपादिक कर्महैं उन में चित्त ठहरता नहीं आनंद के
अभाव करके।१०।इस कलियुग में सात्विता कीर्तन

र॰मं॰
१२
12

की है भागवत में लिखा है। कलौ संकीर्त्य केशवम। ११
अर श्री परमेश्वर विस्नु जीने भी येही कहा है ऐसा।
आनंद पूर्वक मैं वैकुंठ में भी नही निवास करता यो
गी जनों के ह्रिदय में भी नही आनंद होता जिस स्था

नाहं वसामि वैकुंठे योगिनो ह्रदये नच। मद्भक्ता यत्र गायंति तत्र तिष्ठामि नारद १२

न विषैं मेरे भक्त जन गायन करते हैं उस स्थान।
प्रसन्नता पूर्वक श्रवण कर निवास करता हूं १२
स्कंद पुराण में ब्रह्मा जी को विस्नु जी का वाक्य

येह है सुन पुत्र रागकी महिमा जिस दे जानने मात्र
करके भाव पूर्वक मेरी प्राप्ति होगी भक्तों को क।
लियुग में इसते अवश्य सिखना योग्य है।२३। अब
जो पुरुष लज्जा जगत की को छोड कर आप गाय

स्कंद पुराणे श्री भगवद्गीता को ब्रह्माणं प्रति॥ श्रृणु पुत्र प्रवक्ष्यामि रागमाहात्म्य मुत्त
मम यस्य विज्ञा न मात्रेण सुलभो हं सदा कलौ॥२३॥

न करे अथवा विशेष करके लज्जा होई है उगति में।
जिसको सो गायन करे तो उसको एक निमेष का
अर्धका फरकना मात्र काल में कोटि पूजन का।

गा॰सं॰ १३

13

फल होगा॥२४॥ अर जिस पुरुष को इस राग विर
या की तो किसे शुभ कर्म में प्राप्ती होगई हो औ
र पूर्व जन्म के माडे कर्म से जो बिगडी होई मनकी
प्रवृत्ति विषयों में होगै हो भक्ति विरक्ति योग ॥

स्वयं यः कुरुते गीतं विलज्ञो गायते यदि। सलभे त्रिमिषार्द्धेन कोटि एजा कृते फलम्॥२४॥ प्र पच
पूर्वजन्मज मेद कर्मा वसा देण यः मेद भागेपि यस्य भक्ति र्न प्राप्ता न विरक्ति र्न योग

की प्राप्ति न होई हो उसकी भक्ति, नहीं होती [~~कालेभ~~ तो
~~न सर्व साधनेषु साधन प्राप्या न्यता~~] उसको फलो ॥
नर प्राप्त होगा जैसे याज्ञवल्क्य जीने लिखा है २५

१३

गीत के जानने वाले को जे कर योगाभ्यास अथवा
भक्ति की प्राप्ति ना भी होवे और इन में जो भक्ति
होती है सो भी न होवे तो भी शिवजी जो परम दया
लु है उनको रागी पियारा लगता है और उनों के

स्तस्यापि केन विक्षुभ कर्म्मणा रागप्राप्ति र्जाता तस्यापि फलान्तरम्।।५।। गीतज्ञो यदियो
गेन नाप्नोति परमं पदं रुद्रस्यानुचरो भूत्वा तेनैव सह मोदते।।६।। इति याज्ञवल्क्य।। ॥

पास जाकर अनुचर क्या उनका दास बन कर के
लास में प्रसन्नता पूर्वक रहेगा।६। ऐसे ही देवी।
भागवत में भी लिखा है। जैसे गंगा अर सरस्वती नदी

र॰मं॰ १४

ये स्नान करने कर शीघ्रही कैलास पर नहीं पोंहचा
सकताये जैसे गान सरस्वती का रागका गाना प
ढ़ेगा सकता है एक यमक में नग नाम पर्वत का ले
ना। २७। अब जो मनुष्य राग कों नहीं जानता अर।

देवी भागवते ॥ यथा न यति कैलासे न गंगा न सरस्वती। तथा न यति कैलासे न गंगा न स
रस्वती ॥ २७ ॥

सनना भी जिसकों नहीं आवता कुछ भी इसकी पे
छान हीहै उसकों यद्यपि श्रृंग अर पूछनहीं है।
तब बी बोह एक पशूही जानना इस बात में कुछ।

१४

संशय नहीं है।२८। अब संगीत कल्प द्रुम में ऐसा लि
लिखा है। जो सुखी पुरुष तिन कों तो निधि रूप है
और जो दुःखी भी हैं उन के दुःख के दूर करणे वा
ला है अर जो कोई प्रीति में सुने उस कों मनके हर

रागे नवे ति या मर्थः श्रवणे व स्ता न्वितम्। मृग पुच्छ विहीनो पि पशु रेव न संशयः॥२८
संगीत कल्पद्रुमे॥ सुखिनि सुखिनि याने दुःखि नानो विनोदः श्रवण हृदय हारी मन्मथ

णे वाला है अर मन्मथ जो कामदेव तिस करके जो
युक्त पुरुष हैं तिन्हों के वासते भी कामके साधन क
करणे वासते काम देवका अग्र दूत है अति चतुर जो

पुरुष सो इस विद्या में अव गाहन कर इसका आनंद
लेते हैं अर कामिनीयो जो स्त्रीयो उनका भी अति व
ल्लभ का बहुत प्यारा है ऐसे नादकी जय हो ये भी
एक पंचम उपवेद है इसको नमस्कार होवे । १५ ।

स्यागृहनः श्रुतिवक्त्रस्वर्गस्योवल्लभः कामिनीनां जयति जयति नादः पंचमश्चोपवेदः १५
अथ रागस्य ॥ पारंपर्यागतत्वमाह । स्वहितः सर्वमपि गोलोक धाम्नि सत्वात् सामरूपत्वाच्च ॥

इति मंगला चरण एक राग स्तुतिः । अथ नादो त्पत्तिः
श्री सच्चिदा नंद स्वरूप गोलोक धाम में विराज मा-
न जो श्री कृष्ण जी हैं तिन्होंने आपने संकल्प करके

नं० २

हृदयाकाश में उत्पन्न कीया जो नाद तिसके सप्त
भाग कर दीये क्या षड्ज आदि सप्त स्वर।२०। ष
ड्ज।१। ऋषभ।२। गंधार।३। मध्यम।४। पंचम।५।
धैवत।६। निषाद।७। इनका स्वरूप येह है। सा....

को हलीये। आकाशसंभवो नादस्तथा नाहत उच्यते आहतं नादमाकृष्य तथा नाहत संस्तका
त् तेन नादं सप्तधा कार्षीत्तथा षड्जादिभिः स्वरैः इति। २०। श्रीसच्चिदानंदस्वरूपः कृष्णः हृदयाका

रे... ग.. म.... प.... ध... नि.. येह क्रम क्रम में ए
क से दूसरी ऊंची ऊंची बोलती है।२१। संगीत क
ल्प द्रुम में येह लिखा है। के कल्प के आदमें जब

र॰ सं॰
१८ ब्रह्मा जीकों परमेश्वर की कृपा कर जब वेद प्राप्ति
होई तब उन वेदों के सार कों निकाल कर येभी
एक पंचम वेद कथन कीया जो श्रीकृष्णजीने।

शाउल्यितेनादे सप्तधाकार्षीत् कृतवान्निमर्थः अर्थात् ॥ षड्ज।१। ऋषभ।२। गांधार।३।
मध्यम।४। पंचम।५। धैवत।६। निषाद।७। कल्पादौ तु ब्रह्मणः सकाशाद्रागो जातः ॥
एतां चतुर्णां वेदानां सारमाकृष्य पद्मभूः इमं तु पंचमं वेदं संगीताख्यमकल्पयत् ॥ २२ ॥

कहाया सो उनकी आज्ञा कों पालन कर गाके।
आनंद युक्त शास्त्र कों बनाया।२२। वेदाध्ययन
अर दान अर देवता येह त्रिवर्ग फल देतेहे अर।

१८

16

जो संगीतका विज्ञान है सो चातुर्वर्ग्य के फलकों दे
ता है इस वास्ते कथन कीया ॥२३॥ और हरि शिवा
दि जो जगत के स्वामी हैं तिन्हों करके अनिणादित।
संगीत शास्त्रका जो विज्ञान है तिस में धर्म अर अ

त्रिवर्गफलदाः सर्वे दानाध्ययनसादयः एकं संगीतविज्ञानं चातुर्वर्ग्यफलप्रदम् ॥२३
हरीशादिस्तुतो धर्मो धर्मकामार्थसाधकः निष्कामानन्दनष्ठान्मोक्षलस्सानन्दमर्पितं ॥२४ ना

र्थ अर कामना येह सभ सिद्ध होते हैं जो सकामी।
पुरुष हैं उनकों अर जो निष्काम भक्तजन हैं उन ॥ श्री ॥
कों मुक्ति प्राप्त होती है इसी कारण तें अत्यंत श्रेष्ठ २८

रा॰सं॰
१७
17

अब इस में गीत विद्याका शिवजीने पार्वति प्रति येह
फल कहाहै हे पार्वति जितने रागहैं येह सब विष्णु
नारायण का अंशहैं अर शब्दकी उनकी मूर्तिहै इन
के अभ्यास करके गानेका जो फलहै उसकी संख्या [illegible]

काव्यालापाश्च ये केचित् गीतकान्यखिलानि च
शब्दमूर्तिधरस्यैते विष्णोरंशा महात्मनः सर्वेषामेव पुण्यानामस्ति संख्याय शस्विनी।२५। ॥

हो सकती है शास्त्रसें ।२५। इसी वास्ते मेरेको हृतमें
भी एसी नही है प्रीति अर उरप में भी नही है अर
गुण्यन्नकी सुगंधि में भी एसा प्रसन्न नही होता ।

१७

जैसा मैं संगीत के सुननें में प्रसन्न रहता हैं।२८। अ
ब नादकी महिमा कथन करता हूं। शास्त्र के विचा
रते नाद की उपासना जैसी कोई भी उपासना न
ही है जो योगाभ्यासी होतेहै सो इसी की उपासना

कस्मात्तुगीयतेयेनतस्मैसंख्यानविग्रहे नतुतेनादृशीप्रीतिर्निदीरेनवर्णगुलतौ।२८।यादृशीचैव
गान्धर्वेममप्रीतिर्विवर्धते अथनादस्यचोत्पत्तिं वदेशास्त्रविवेकतः।२७। धर्मार्थकाममोक्षाणामि

कर होतेहैं।२७। धर्म अर अर्थ काम धर्मोत्पत्ति का।
म मोक्ष इन पदार्थों का एक संगीतका विज्ञान
ही परम साधन हैं।२८। ॥ २८ ॥ २८।

१.मं. १८ 18

अब जानना चाहीये। ग्राम्यगीतं। इत्यादि जो ग्रा।
निषेधक वाक्य हैं उनका अर्थ प्राय मूर्ख लोक न
ही समझते सो वर्णन करते हैं प्रथम भागवत के
ग्यारवें स्कंध में जो लिखा है ग्राम्य गीत न सुने सो।

यत। ग्राम्यगीतंनशृणुयाद्यतिर्वनचरःक्वचित् नृत्यगामेभवाग्राम्यान्नार्थ्यः वा स्त्री विशेषः।
नासौगीतंनशृणुयात् भगवद्गीतंनशृणुयादेव।२१। ॥

जो कामिनीयां स्त्रीयां हैं तिनके भी जो काम चेष्टा वा
ले गीत हैं सो जो वन में निवास करने वाले यति
का मनयक्त धर्म युक्त है सो न सुने परंतु भागवत्की

भा १८

टीका में येही अर्थ कराहै अर इसीपर ये भी लिखा
है क्या भगवानका जो प्रेम युक्त गीतहै सो चाहीय
स्त्री चाहे पुरुष गावे तो वोह सुनना चाहीये जरूर
उसका बहुत माहात्म्यहै। अब जो मनुने। स्मृतिमे
लिखाहै। नत्यादिगीतवादयेत। अर जो गृहस्थ
आदि में निषेधहै सो गृहस्थादिकों के कार्य्यों की
सक्ती के वासते है अर जो गाना अर बाय इनमें जि
सकी प्रीति हो जातीहै उसको गृहस्थ के बंधन।

र॰सं॰
१५

नान्यत्र तजे यत्न
ग्राल्पपात्र कृतिस्त्री
मद्भागवते ४

२ विरक्तों [illegible]

अच्छे नही लगते अर पदमें घटका होजाता है इसी
वासते जो जो गृहस्थ अथवा धनादि संपदा इत्यादि
कों में मग्न थे उनो ने निषेध कीया सो सक्ति में नि-
षेध ठहरा अर सक्ति असत्य है क्युं कि क्लेश दायक है अर
विरक्ती सत्य है क्यु के उस में संगति होती है उसका
मूल रागा है इसी वासते परम भजनका अर एकाग्र
वृत्तिका साधन है फिर कल्प वृक्ष के सदृश है जे
कर धनादिकों की इच्छा हो तो सोभी बहुत मिल जा

तोहै इसतैं बहुत उनमेंहैं केउके लिखोहै। सद्यो फल

ते गांधर्वम। अर्थात सद्यः फल देने वालाहै क्या।

'गंधर्वीगुण २ उसी वेले फल देताहै।२९। अर गायन रूपी जो पर

मेश्वर की भक्तीहै उसके सदृश कोईभी और आने

श्लोक्या
प्रेष्ठतामाह॥ मत्वाग्रपिविग्रहंश्रुत्वाभगवंतेभजेते॥ श्रीमद्भागवतेपि॥ भक्तिःसिद्धेर्गरीयः
सी॥ ३०॥

द नहींहै जेकर कोइ कहे भक्तिमें बडा आनंदहै त

ब भक्ति भक्ति के आनंदके आगे तुछहै केउके भा

ष्यकारों ने वेदस्तुति की टीका में लिखोहै जो भ

र॰ सं॰ २॰

20

क होगये होयेभी हैं सो भी इस गायन रूपी भक्ति-
के आनंद के लयने वासते शरीर धारते हैं अर भ-
जनका आनंद लयते हैं इसी वास्ते भागवत में बहु-
त स्थानस्थान में येह कहाहै सिद्धे में क्या भक्ति में

आत्मारामाश्चमुनयो निर्ग्रन्थाअप्युरुक्रमे । कुर्वन्त्यहैतुकींभक्तिमित्थम्भूतगुणोहरिः ॥ ३१ ॥

भक्ति बडी है । ३० । अर जो शुकदेव स्वामी आदिक
आत्माराम क्या ज्ञानवान् भीथे अर उनको कोई
भेदेह भी नहीं था फिर भी अहैतुक भक्ति क्या जि

स में याचनाका कुछ कारण नहीं है उस भक्तिका
आनंद लेते हैं और आनंद ही हरि नारायणका रु
णहै ।३१। सो आनंद भक्ति युक्त गायन में है सो गा
यन संगीत के जानने करके यथार्थ करके होता

तथाचेननारदब्रह्मर्षिभरतादिभिर्गानभक्तिर्विज्ञीतातत्तुगानेसंगीतानुसारेणभवति त
त्संगीतमाह। गीतंवाद्यंचनृत्यंचत्रिभिःसंगीतमुच्यते ।।संगीतकल्पद्रुमेदेशीमार्गलक्षणमाह।।

है इसी वास्ते संगीत को कहिते हैं । अब इस संगी
अर दूसरा क्रिया भाग सो प्रथम तो शास्त्र भाग कथने : २
त विद्या के २ दो भाग हैं एक तो शास्त्र भाग कहता
हूं फिर क्रिया भागकी भी रीती कथन करूंगा अ

र॰सं॰
२१

इस संगीत शास्त्र के अभ्यास यों विना राग विद्या
यथार्थ नहीं आवती इसी वासते संगीतका लक्षण
कहिता हूं जिस ग्रंथ में गायन विद्याका जो निदान
है अर्थात स्वरता स्वर ग्राम मूर्छनादि सभ भेद होवें

मार्गदेशीविभागेनसंगीतंद्विविधंमतम् २२ स्वर्गेमार्गाश्रितंदेशीश्रितंभूतलरंजकम् नाना
यत्नेनयज्ञोक्तंब्रह्मणेद्रुहिणेनच ॥ २३ ॥

सभ तरह के वाद्य बजानेका प्रकार होवे अर नृ
त्यकी गतें अर हाव भाव कटाक्ष होवें उस शास्त्रका
नाम संगीत शास्त्रहै सो संगीत दो प्रकारकाहै ए

2

क देशी दूसरा मार्ग । ३३ । जो तो नारायण जीने ब्रह्मा
जीको कहा है महादेव जीके संमत से मार्गी राग ।
है सो स्वर्ग में संपूर्ण है कुछ कुछ पृथवी परभी है पृ
थवी पर मिश्रित है । ३३ । अब जो देशी राग है सो सभ

महादेवस्य पुरतस्तन्मार्गाख्यंविमुक्तिदम् तत्तद्देशीययारीत्यायत्स्याल्लोकेनुरंजकम् पउक्तेदुरि

देश देश में प्रसिद्ध है केतेही रागोंका नाम उसी दे
शाका हो गया जैसे मुलतानी पहाड कस्तूरी जैत ।
ला लेमकीजोग सोरठमारवाडी इत्यादिक देशी ।

राग होताहैं अथवा जिस रागकी सूरत शास्त्रके नि
यम मैं और तरांहकी प्रतीती देवे सोभी देशी होता
है।२४। अब मार्ग मैं तो आदि राग विंशति मानेहैं।
जैसैं।श्रीराग।१।नाट।२।बंगाल।३।भास।४।मध्य

रोगेनैवममार्गइतिप्रोच्यते देशेदेशेतुसंगीतंतद्देशीयंविधीयते।२४॥ अथमार्गमतम् ॥ श्री
रागोनाटभासौचबंगालोमध्यमस्तथा षाडवोरक्तहंसश्चकोल्हासोनिउर्ल्लभः ॥ २५ ॥
(प्रा)

म।५।षाडव।६।रक्तहंस।७।कोल्हास।८।२५। प्रभव
९।भैरव।१०।ध्वनिः।११।मेघ।१२।कामोद।१३।आ
म्रपल्लव १४ कंदर्प १५ देशाख्य १६ ककुभांत १७। २६

कौशिकः ।१८। नटनारायणः ।१९। श्यामः ।२०। अब
देशी मत वाले छै राग मानते हैं। भैरव ।१। मेघ ।२।
मालकौंस ।३। ३७। दीपक ।४। श्रीराग ।५। हिंदोल
मतान्तरेणचत्वारिंशत् ४ · चत्वारिंशत् ४
।६। त्रिंशति रागनी अब आठ आठ पुत्र आठ आठ नै

प्रभवोभैरवश्चैवमेघरागस्तथाध्वनिः आम्रपल्लवकामोदोकंदर्पोककुभांतकः ।३५। श्यामरा
गः कौशिकश्चनटनारायणस्तथा मार्गमतानुसारेणरागाविंशतिरीरिताः ।३७। इत्यादिकेमार्गभेदे

हो सो जगत में सब लोक गुनी जन गायन करते
हैं इनकी भी कालांतर में देश देश में भिन्नता हो
ती रहती है इसी वासते संज्ञा देशी हो गई। इति का।

रा॰सं॰
२३

23

अब संगीत नारायण के मत में देशी मार्गी के भेद ।
कथन करते हैं । मार्ग राग सो है जो ब्रह्मादिकों ने
शिव पार्वती में मार्गित कीयाः क्या लभिया अब भरतादि ।
कों ने ग्रंथों में स्थापनकीया गंधर्वों नेभी वर्त्तया गा

संगीतनारायणे तु ॥ ब्रह्माद्यैर्मार्गितंशंभोः प्रयुक्तेभरतादिभिः गांधर्वैर्वादनेन्दस्य यस्स मार्ग इतिस्म
तः॥ ३८॥

या बजाया सो मार्ग मत है । ३८ । अब देशी देश देश
विषें राजधानियों में तिन राजयों की प्रसन्नता वा र
मते गाया जैसें लानसेन आदिकों नें मीयेकीटोडी ।

मीयेकी मल्लहार दिनके कान्हड़े एक राग में और
और राग मिलाय कर उसका नाम पूर्व मत में
भिन्न करदीया सो गान वाद्य नृत्य देशी सेज्ञक हैं
येह प्रकार बुद्धिमानो ने मानाहै ।१५। कोहलीये

देशीमाह ॥ देशे देशे जनपदादीनां यदाह्लादकारकं परं गानं वाद्यं तथा नृत्यं तत् देशीत्युच्यते बुधैः ॥१५॥
कोहलेन तु भिन्नतयोक्तम् ॥ अतः परं प्रवक्ष्यामि नाट्यं नृत्यविकल्पने नटस्यातिप्रवीणस्य कर्म

य में भिन्न प्रकार कहाहै अब जो नट श्रेष्ठ है उस
का जो कर्म होवे उसको नाट्य कहते है क्या गा
ना बजाना और नृत्य करणा ।१६। इस नाट्य के

र॰ सं॰
२४

24

दो भेद हैं एक मार्ग दूसरा देशी ब्रह्माजीने जो तप
करके शिव अर पार्वती जी से ग्रहण कीया सो मा
र्ग है सो विंशति प्रकार है जैसें नाटक ।१। प्रकरण ।२
नाल ।३। प्रहसन ।४। व्यायोग ।५। समम ।६। केर ।७। वी

मार्गीदेशीतिनाट्यस्यभेदद्वयमुदीरितम् ब्रह्मणायतपलब्धामार्गितःशिवयोःपुरा । धर
मार्गनाट्यंततस्त्वाहुःतच्चविंशतिधोच्यते नाटकंचप्रकरणंनालेप्रहसनेडिमः ॥ ४२ ॥

हा ।८। केका ।९। मृग ।१०। अपने श्रृंगार के समें विषे ।
शिवपार्वती जीने ब्रह्माजी कों येह दस प्रकार क
ह कर दस और कहे हैं नाटिका ।१। त्राकलिका ।२

नालिका। ३। हासिका। ४। वियोगिनी। ५। डिपिका ६

कलोन्साहवती। ७। चित्रा। ८। जुगुप्सिता। ९। विचित्रा

र्द्धउरगा। १०। येह विंशति प्रकारका मार्ग मत है। प्र

व देहिल आदिक रागाचार्यों नें देशी के बारे रूप

व्यायोगः समवकारौ च वीथ्यंकेहामृगा इति रूपकानि दशैतानि भाषितानि शिवेन हि। ४३।
नाटिकाप्राकलिका च नालिका हासिका तथा वियोगिनी च डिपिका कलोत्साहवती पुनः ४४

कहे हैं सो येह है पट्टक। १। त्रोटक। २। गोष्ठी। ३। त्रै

टक। ४। शिल्पिक। ५। प्रेलण। ६। मेल्लापक। ७। ह

लीस। ८। पेसका। ९। पवांश्रीगादित। १०। भिलुकी ११

सज्ञिता परिवर्त्ती ५६
मूर्त्तिं ५७ प्रहेलिका ५८

सोलं

रा० सं०
२५

25

तेविकी। ५०। यह बारो प्रकारके देशी के प्रयोग क
हेहैं सो अलंकारके शास्त्रों में विस्तार से कहे हैं। नाटिकाध्याय में इनके लक्षण भी कहेंगे
४७।४८। पुरातन मत जो गायनकाथा जिसको।

विवाजगुरुसिलाचैवविचित्रायोतिदुर्गीया एवंमार्गेनाट्यमके शिवाम्भोजलाणपुरा ॥४५॥ दे
शिलादिभिरुक्तानि देशीरूपाणि षोडश पहकेत्रोटकेगोष्ठीवृंदकेचततःपरम् ॥४६॥ शि
ल्पिकेप्रोक्तणि संलापकेचतिततःपरम् हल्लीसकाभिकाप्रोक्ता षैवेश्नीः गदितं तथा ॥४७॥ मि
लकीतेवकीचैव दुर्गोदुर्शोक्तानि स्मृतिभि रैतेषां लक्षणान्यलंकारशास्त्रे बहुधोक्तानि विस्तर

॥टीका॥

षोडश

सज्ञिता च ततः परं
परिवर्त्ती तथा मूर्त्तिः
ततः प्रोक्ता प्रहेलिका
देशीरूपाणि देशेषु ४

सेरणी यथार्थ देवता ब्रह्मादिक गायनादि करेथे ते
सो मार्ग मतहै अर जो तानसैन आदिको ने गा
या बनाया सो देशी मतहै देशी मत वाल्यो ने आ

२५

द राग छे मानेहैं सो कैं नराहके हैं प्रथम दामोद
र जीने येह छे रागमाने हैं त्रिंशति रागिनीयो र
मानीहैं सो जैसें भैरव १ वसंत २ मालवकौशिक
३ श्रीरागः ४ मेघराग ५ नटनारायण ६ येह पु

अथ दामोदरः॥ रागाः षडेव कथिता रागिण्यास्त्रिंशदेव हि भैरवोऽथ वसंतश्च रागो मालवकौ
शिकः ४५ श्रीरागो मेघरागश्च नटनारायणस्तथा एते पुंसः षड्रागाः क्रमात् रागिणीः शृणु:

रुष राग हैं अरु दीपक इनमें नही माना तानसेंन
ने नटनारायण के स्थान माना हैं। ४५। अब इन
की स्त्रीयां पांच पांच हैं सो भैरवी १ कौशिकी २

रा० सं०
२६

26

भाषा ३ वेलावली ४ बंगाली येह भैरव राग की
यो स्त्रियां हैं। ५०। अब आंदोलिता १ देशाख्या २ लो
ला ३ प्रथम मंजिरी ४ मल्हारी ५ येह बसंत राग
कीयो स्त्रियां हैं। ५१। अब गौरी १ खंभकरी २ बरा

भैरवीकौशिकीश्रेष्ठाभाषावेलावलीतथा बंगालीचेतिरागिण्योभैरवस्यैववल्लभाः ५१
आंदोलिताचदेशाख्यालोलाप्रथममंजिरी मल्हारीचेतिरागिण्योवसंतस्यसदानुगाः ५२

री ३ ललमावली ४ करणाटी ५ येह मालकौंश की
यो स्त्रियें हैं। ५२। अब गंधारी १ देवगंधारी २ मा
लवश्री ३ शावरी ४ रामकरी ५ येह श्रीराग की

यो स्त्रियोंहैं।५३।अथ ललिता १ मालसिरी २ गौरी ३
नाटी ४ देवगिरी ५ येह मेघ राग कीयां स्त्रीयांहैं
५४। अथ नाराणी १ आभीरी २ कामोदी ३ गूर्जे

गौरी सम्मकरी चैव वराटी वलभावती कर्णाटी चैव रागिण्यः प्रियामालवकौशिके।५३
गांधारी देवगांधारी मालवश्री सुधारवी रामकर्यपि रागिण्यः श्रीरागस्य प्रिया इमा।५४
ललितामालसी गौरी नाटी देवगिरी तथा मेघरागस्य रागिण्यो भवंतीमाः सुवल्लभा।५५
नाराणी तथाभीरी कामोदी गूर्जरी तथा ककुभा चेति रागिण्यो नटनारायणप्रियाः।५६

री ४ ककुभा ५ येह नटनारायण कीयां स्त्रियांहैं
५५। इत्यादि देसी मत जो शास्त्रों में वर्णन कीया
है सो सभ मतों के राग रागाध्याय में वर्णन करे।

\+ मतांतरमे दूसरोने से षट् रागोंकी रागिनी भिन्न. भिन्न हैं सो प्रकरणमे
कहेंगे.

र. सं.
२७

27

जायेंगे इस स्वराध्याय में उनकी कुछ जरूरत नही
है+ ।५६। सब नादथी विना स्वर नही होता अर स्व
रथी विना राग नही होता अर रागथी विना संगीत
नही होता है सारा जगत् नादात्मिक है नाद जीवा

इति संगीतदामोदरे मार्गदेशीमतम् । अथ नादमाह । न नादेन विना गीतं न नादेन विना स्वरः
न नादेन विना रागस्तस्मान्नादात्मकं जगत ५७ स नादः कथमुत्पद्यते त्याह ॥ आत्मा बुद्ध्या म

त्मा का प्रकट हुए है इसीका योगाभ्यासी प्रथम अ
भ्यास करते हैं तिसको प्रणाम होवे ।५७। सो दो प्र
कारका है एक तो ध्वन्यात्मक ध्वनि वाला है दूसरा

आहतोऽनाहतश्चेति स नादो द्विविधो मतः पञ्चभूतसंयोगः आहतः
सम्प्रकीर्तितः एको ध्वन्यात्मको ज्ञेयः परो वर्णात्मकस्तथा। १। आह
तो रंजकश्चैको नाहतो मुक्तिदायकः ॥२

वर्णात्मिक है जैसें पुस्तकादि पाठ मंत्र वर्णा॰
त्मादिक है। इति नाद वर्णनम्। अब नादकी उ
त्पत्ति कौंन करताहै उत्तर जो जीवात्मा ह्रिदय॰

मेरुस्थान्मनो युंक्ते विवक्षया मनः कायाग्निमाहंति स प्रेरयति मारुतं ५८ सामरुतस्तूर॰
सिचरन्नंद्रं जनयति स्वरम्। तथा कोहलीयेपि। आकाशाग्निमरुज्जीवोर्नभेहंद्वे समचरन्
मुखेभिव्यक्तिमायाति यः स नादः प्रकीर्तितः ५९ नादाच्छ्रुतयो जातास्ताभ्यो षड्जाद
यः स्वराः तेभ्यः स्युर्ग्रामनामानि तानानाद्या ग्रामसंभवाः ॥ ६० ॥ ६० ॥

आकाशमें निवास करताहै सो बुद्धिके साथ अर्थको
विचारताहै अर मनको आज्ञा करताहै सो मनका
याके अग्निको प्रेरताहै सो अग्नि प्राण वायुको प्रेर
ताहै सो प्राण छाती में आनकर मंद्र नाम नाद होजाताहै। ५८।५९।

र० सं०
२८

इस नादमें स्वरता उत्पन्न होतीयांहैं तिनमें षड्जा-
दि सप्तस्वर उत्पन्न होतेहैं अरु स्वरों में मूर्छना २१
इक्कीस उत्पन्न होतीहैं तिन्हों मूर्छनों में तानों-
की गिनती में रागके भेद ग्राम जन्य होतेहैं।८०

कासाश्रुतीत्याह॥ प्रथमश्रवणाच्छब्दः श्रूयते ह्रस्वमात्रिकः साश्रुतीसंपरिज्ञेयास्वरावयव लक्षणा।८१

अब स्वरताकी व्यवस्था कहिताहै। स्वरता स्वरके अं-
शका नाम प्रथम श्रवण करणे में जो यत् किं-
चित् स्वरावयव ह्रस्व मात्र उसको स्वरता कहते

श्रु०॥८१॥

अर येह स्वरता बाइ २२ हैं जैसें षड्जकीयो चार ४
तीव्रा १ कुमुद्वती २ मंदा ३ छंदोवती ४ येह चार
स्वरता हैं। अर ऋषभ कीयो ३ हैं दयावती १ रंजि
नी २ रंतिका ३ अर गांधार कीयो दो २ स्वरता हैं।

चतश्चतश्चतश्चैवषड्जमध्यमपंचमाः द्वेद्वेनिषादगंधारौत्रीस्त्रीऋषभधैवतौ ॥ ६२॥

रौद्री १ क्रोधा २ अर मध्यम कीयो चार ४ स्वरता।
हैं मार्जनी १ प्रीति २ प्रमारिणी ३ वज्रिका ४।
अर पंचम कीयो चार ४ स्वरता है क्षिति १ रक्ता २

र० सं० २९ संदीपिनी ३ अलापिनी ४ अर धैवतकीयो त्रय
स्रुता हे मदंती १ रोहिणी २ रम्या ३ अर निषाद
कीयो दो २ स्रुता हे उग्रा १ क्षोभनी २ ।८२। [अब।
येह स्रुता क्रम में ऊंची ऊंची तरफ चडती हैं क्यों]

सहसांकेन

अश्विनौ वसवो रुद्राः सहैमोकेन षण्मुखः । प्रशाशेसहेरेवैरीदमनोद्वाविंशतिश्रुतिः ॥८३॥
क्रमाउच्चोच्चगाः सर्वा वीणादावेव लक्षिताः कफादिउष्टैः कंठे यंत्रात्साम्यं हि च जायते ८४॥

अर दो अश्विनी कुमार अष्टवसु याराँ रुद्र ^ विस्नजी (सहित चंद्र के ^)
के नाद को सुनकर श्रेष्ठ करते भये इस वासते।
बाईस स्रुतियां हैं। अब येह स्रुता क्रम में ऊंची

वीणाकी निषाद

ऊंची तरफ चढती हैं क्यों षड्ज में जैसे ऋषभसुत क ध इनका बोध वीणा सितार में होताहैं कंठ जो कफआदिकों करके रुप्रहैं तिन में नही होता हैं। ८५। अब श्रुतियों को कोई चाहे स्वरके सदृश

श्रुतिस्थाने स्वरान्वक्तुं नालं ब्रह्मापि तत्वतः जलेषु चरतां मार्गो मीनैर्नैवोपलभ्यते ८५
इति संगीतनारायणे। अथनादस्थानमाह॥ ते त्रिधा स्मर्यं द्र मध्यनाराभाव समाश्रिताः वीणिस्था

गले में ठहरावो तो ब्रह्मा भी नही ठहरा सक्ता हैं जैसे जलका रस्ता गहरा मछलीयों को भी नही मिलता। ८५। अब नादके तीन स्थानहैं प्रथम।

र॰ सं॰
३॰
30

नाभी देशतें शुद्ध स्वर उत्पन्न होताहै सो त्रय प्रका
रकाहै। मंद्र १ मध्य २ तार ३ मंद्र हृदयतें उत्पन्न
होताहै अर मध्यकंठ में अर तार कपालतें होता

नाभितेषाहिहृदि मंद्रोऽभिधीयते। ८६। कंठे मध्यो मूर्ध्नि तारो द्विगुणश्चोत्तरोत्तरम्॥ ८७॥
तस्य पुनस्त्रैविध्यम्। उदात्त अनुदात्त स्वरिता इति उच्चैरुदात्तः नीचैरनुदात्तः समहृत्या स्वरि
तः। ८८। उदात्तादीनां लक्षणमाह। उदात्ते निषादगांधारावनुदात्ते ऋषभधैवतौ स्वरितप्रभ
वा ह्येते षड्जपंचममध्यमाः॥ ८९॥

है येह क्रमसे उत्तरोत्तर द्विगुण है।८७। फिर येह नाद
तीन प्रकारकाहै उदात्त ऊंची स्वर १ अनुदात्त नीची
स्वर २ स्वरित सम स्वर।८८। निषाद अर गंधार स्व

की उदात्त संज्ञाहै अर ऋषभ धैवत इनकी अनुदा
त संज्ञाहै अर षड्ज मध्यम पंचम इनकी स्वरित
संज्ञाहै नारदजीके मतमें ।६९। अब ग्राम वर्णनक
रते है । अथ ग्राम लक्षण येहहै सात स्वरोंका

अथग्रामलक्षणम् ॥ सप्तस्वराणांसंदोहोग्रामइत्यभिधीयते षड्जग्रामेभवेदादौमध्यमः
ग्रामएवच ॥ ७० ॥

जो समूहहै तिसका नाम ग्रामहै अथवा ग्राम पिंडका
नामहै जिसमें लोक निवास करते हैं तैसें जिस
में षड्जादि स्वर चलते हैं उसका नाम ग्रामहै सो

र०सं० ग्राम तीनहैं प्रथम षड्ज ग्राम १ दूसरा मध्यमग्राम २
३१ तीसरा गंधारग्राम ३ अब इनके लक्षण कहताहैं
31 षड्ज ग्राम अर मध्यम ग्राम येह दोनो पृथवीपर
प्रवृत्तहैं अर गंधार ग्राम इंद्रलोक में है ।७०। अब

गंधारग्राम इत्येते ग्रामत्रयमुदाहृतम् ॥ अथ गीतावलीग्रंथेयम् ॥ ग्रामः स्वरसमूहः स्यात्
मूर्छनादेः समाश्रयः तौ द्वौ धरातले तत्र स्यात् षड्जग्राम आदिमः ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

प्रकार षड्ज ग्रामका जद धैवत तीन श्रुतीका १
हो तब षड्ज ग्राम होताहै अर जब धैवतकीया
वार श्रुति होंय तब मध्यम ग्राम दूसरा होताहै

३१

जब ऋषभ दो श्रुति पर उतरे गंधार मध्यम एक
श्रुति चढे पंचम तीसरी श्रुतिपर ठहरे अर धैवत
एक श्रुति उतरे निषाद एक श्रुति चढे तब गंधा
ग्राम होताहै येह ग्राम त्रय हैं एक एक ग्राममें सा

द्वितीयो मध्यमग्रामस्तयोर्लक्षणमुच्यते षड्जग्रामः पंचमेवचतुर्थश्रुतिसंस्थिते ॥७२॥
स्वोपान्त्यश्रुतिसंस्थेऽस्मिन्मध्यमग्राम इष्यते रिमयोः श्रुतिमेकैकां गंधारश्चेत्समाश्रयेत् ७३

त सात स्वर चलते हैं जैसें षड्ज ग्राम ॥ सा । रे ।
गा । मा । पा । धा । नी । येह षड्ज ग्राम(के) स्वर हैं ॥ अब
मध्यम ग्रामः । मपा । धा । निसा । रे । गा । मा । येह मध्यम

अब गंधार ग्रामके स्वर कहते हैं। गा। मा। पा। धा। नि।
सा। रे। गा। येह ग्राम त्रय हैं॥ पंडित लोकोंने किसी
क ग्रंथ में पंचम कोभी ग्राम कहा है तहां गंधार ग्रा
म के स्थान पंचम ग्राम मानते हैं जिन स्वरोंका स्व

षड्जायत्रिश्रुतिःषाड्जीमध्यमस्यापित्रिश्रुतिः पञ्चमेकश्रुतिंनिद्धीश्रुतीसेकश्रुतिंत्रितः ७४
गंधारग्राममाविश्यनद्यातेनारदोमुनिः स्वर्गीत्रान्यत्रगंधारोनारदस्यमतेयथा ॥ ७५ ॥ ७५ ॥

रूप आपस में मिलजावे जैसें एक तार तो षड्ज।
पर मिली हो अर दूसरी मध्यम परहै अर तीसरी पं
चम पर मिलीहै जब सभनाका इकठा छेडहो तो

येह तीनो समता में बोलेंगी इसी वासते इनकी
ग्रंम संज्ञा है। अब मेरी बुद्धि में येह निश्चित है ज
ब निषाद धैवतकी दो २ श्रुती पर उतरे तब मध्य
म ग्राम होता है। ७२।७३।७४।७५॥ अब समस्त

अथातः स्वरशास्त्राणांसर्वेषांवेदानिश्चियम् उच्चनीचविशेषाद्धिस्वराःन्यत्वंप्रवर्तते ७६

र जैसे साम वेदमें कथन करे हैं सो वर्णन करता
है। उच्च क्या ऊंची नीच क्या नीची जो तराह वि
शेष है उस में दूसरा स्वर भासता है जैसे सा रे ग

र. सं. ३३ र सा नी इत्यादिकों को स्वर कहितेहैं। अब सामवे
दके अनुसार स्वरादि लक्षण कहिता हूं। जिसमें
33 पाठ थोड़ा अर्थ बहुता सुनने योग्य वेदका अंग।
बहुत उत्तम। जैसा नारद ऋषि जीने तान स्वर राग

सामवेदेतुवर्त्तामिस्वराणांचरितेयथा अल्पग्रंथंप्रभूतार्थंश्रव्यंवेदांगमुत्तमम्।७७। तान
रागस्वरग्राममूर्छनानांनलक्षणं पवित्रंपावनंपुण्यंनारदेनप्रकीर्त्तितम् ॥ ७८ ॥ ॥

अब स्वर ग्राम मूर्छन सुरतादि भेद कथन करा है।
सो कहता हूं सो कैसा पवित्र करणे वाला चरित है
अति पुण्य सुने में देताहै (मैंजो) स्वरो सात हैं ग्राम

त्रयहैं जिनका लक्षण कहिदीयाहै मूर्छना इकीसहैं
उनचासतान हैं इत्यादिक की स्वर मंडल मेंजाहै अ
ब नारद मत में मूर्छन कथन करते हैं। षड्जकी उ
नर मंद्रा १ ऋषभकी उद्गता २ गंधारकी अश्वक्रां

सप्तस्वरास्त्रयोग्रामामूर्छनास्त्वेकविंशतिः तानाएकोनपंचाशदित्येतत्स्वरमंडलम् ।७९। षड्जेचोत्तरमंद्रास्यादृषभेचाभिरुद्गता अश्वक्रांतातुगांधारेत्वनीयामूर्छनास्मृता ॥ ८० ॥

ता३ मध्यमकी सौवीरा ४ ऋलका पंचमकी ५ उत
रायतायेवतकी ६ निषादकी रजिनी ७ येह सप्त मू
र्छना ऋषियों कीयांहैं। नंदी १ विशाला २ सुमुखी ३

र॰सं॰
३४

34

चित्रा ४ चित्रवती ५ सुखा ६ वलया ७ देवताओंकी स
प्त मूर्छना। ७८। ७९। ८०। ८१। ८२। ८३। ८४। ८५॥ अ
लापिनी १ विश्वम्भरता २ चंद्रा ३ हेमा ४ कपर्द्दिनी ५

मध्यमे वल्लसौवीरा ऋत्तका पंचमे स्वरे धैवते चापि विज्ञेया मूर्छना त्तृत्तरायता ॥८१॥ निषादा
द्रजिनी विंगा ऋषीणां सप्त मूर्छना नंदी विशाला सुमुखी चित्रा चित्रवती सुखा। ८२। वलया चा
पि विज्ञेया देवानां सप्त मूर्छना अलापिनी विश्वम्भरता चंद्रा हेमा कपर्द्दिनी। ८३। मैत्री च वार्हिनी
पितॄणां
प्रोक्ता ऋषीणां सप्त मूर्छनाः ऋषीणां मूर्छना सप्त या स्त्रिमा लौकिकाः स्मृताः ॥८४। ८५

मैत्री ६ वार्हिनी ७। येह पितर लोकों की सात मूर्छ
ना हैं। अब जो ऋषियों की सात मूर्छना हैं सो लौ
किक हैं क्या जगत में प्रसिद्ध हैं। अब गानकी दस॰

प्रकारकी गुणवृत्ति कथन करते हैं। रक्तं क्या वे
णु और वीणा और स्वर इनका जो एकीभाव क्या
तद्रूपता समता में होना १ पूर्णम् स्वर और श्रुति-
का पूरता में पूर्ण जो छंद पाद अक्षर सें बेय।

अथगानस्यनदशविधानगुणवृत्तिःयथा ॥ रक्तं १ पूर्णम् २ अलंकृतम् ३ प्रसन्नम ४
व्यक्तम् ५ विकृष्टम् ६ श्लक्ष्णम् ७ समम् ८ सुकुमारम् ९ मधुरम् १० ॥

उसको पूर्ण कहिते हैं २ अलंकृतम् शिरका-
स्वर जो नाद है और छातीका स्वर जिसका नाम
मंद्र है सो दोनो शुद्ध हो कर कंठ स्वर मध्य में

र॰ मं॰
३५
35

युक्त होन उसको अलेङ्कृत कहितेहैं प्रसन्नम ।
जो गद्गद वाणी थी रहित हो अर निर्विशोकः
हो शोका थी रहित हो सो प्रसन्न संज्ञक होताहै
४ व्यक्तं जो यह पदार्थ प्रकृति विकार आगम ।

(इतिगानस्यदशगुणाः) नवरक्तेनाम वेणुवीणास्वराणामेकीभावे रक्तमित्युच्यते १ पूर्णंना
मस्वरस्फुटविच्छेदः पादाक्षरसंयोगात्पूर्णमित्युच्यते २ अलंकृतंनामोरसिकंठयुक्तमिति =

लोप कृदंत तद्धित समास निपात धातु उपसर्ग
स्वर लिंग वृत्ति वार्तिक विभक्त्यर्थ वचन इत्या
दिकों को अच्छी तरां से समझ कर जो कथनकी

याही सो व्यक्त मेजकहै है ५ विकृष्टम् उच्चैतरो में
जो उच्चारित हो प्रकटा लट स्पष्ट उसको विकृष्ट
कहिते हैं ६ श्लक्ष्णम् अद्रुत अर अविलंबित॰
विलंबरहित उच्च अर नीच स्वर इनका जो समा

प्रसन्नेनामागमनगद्गदं निर्विशंकेच ७ व्यक्तेनाम पदपदार्थप्रकृतिविकारागमलोपकृत्त
द्धितसमासधातुनिपातोपसर्गस्वरलिंगवृत्तिवार्तिकविभक्त्यर्थवचनानां सम्यगुपपादने व्यक्त

हार एकत्रता अर हेलामात्र तालकी जो उपपाद
नता है क्या ताल जिसके वश हो ऐसा न हो कि
स्वरमें श्रुती देने में तालकी लय बिगड जावे ७

र॰ सं॰
३८

सको शानता कहिते हैं ७ सम अवाय निर्वाय प्र
देश अन्तर इन स्थानों की जो एकता है उसकी
सम मे जाने हैं ८ सुकुमारम कोमल पद वर्ण स्वरा

विकटम नामोदारुचारितेव्यक्तपदाक्षरमितिविकटम् ६ श्लेषं नामाङ्गतमविलंबितमच
नीचस्वनसमाहारं हेलनालोपनयादिभिरुपपादनाभिः श्लेषमित्युच्यते ७ समं नामावाय
निर्वापप्रदेशप्रसेतरस्थानानांसमासः सममित्युच्यते ८ सुकुमारं नाममृदुपदवर्णस्वरकुहराण
युक्तंसुकुमारमित्युच्यते ९ मधुरं नामस्वरभावोपनीतललितपदाक्षरगुणसमन्वं मधुरमित्युच्यते

कुहर गंभीरता इन करके जो युक्त हो उसको सु
कुमार कैहते हैं ९ मधुरम् स्वरका जो भाव क्या
भिप्राय यथार्थ लगाना जैसे सुंदर रहे ऐसे लगा

सेंदर पद अक्षर गुण में हुइ जो हो उसकी मा
धुर संज्ञा है इन गुणों करके जो युक्त हो सो श्रेष्ठ
गायन होता है । येह दश गुण हैं । अब इन दश गु
णों में आचार्य्य जो इस विद्या के उस्ताद हैं । सो सम

प्रेहमाह ॥ आचार्याः सममिच्छंति पदच्छेदं तु पंडिताः स्त्रियो मधुरमिच्छंति विकृष्टमितरे जनाः ॥ २ ॥

एक गुण राग की इच्छा करते हैं अर जो पंडित लो
क हैं सो पदछेद क्या भिन्न भिन्न पद खुलासह ।
अर्थात् आमकी इच्छा रखते हैं अर स्त्रियां मधुर ।

रा॰ सं॰ ३७

37

की इच्छा रखतीहैं अर इतर जन विष्णुकी इच्छा
रखतेहैं । २ । अर जो साम वेदके पढने वालोंका
प्रथम स्वरहै सो वेणुका मध्यम स्वरहै जो दूस
रा सो गंधार है अर जो तीसरा सो ऋषभ है अर

अधुनासामवेदिनांगायकानांचस्वरभेदमाह ॥ यःसामगानांप्रथमःसवेणो मध्यमःस्वरः
योद्वितीयःसगंधारःस्तृतीयस्त्वृषभःस्मृतः ॥२॥

चौथा षड्जहै अर पंचमा धैवतहै छठा निषाद है
सातमां पंचमहै । ३ । अब जो सप्त स्वरहैं उनके
लक्षण कथन करतेहैं । प्रथम जो षड्जहै सो छे

अस्थान में होताहै यथा नासा। कंठ। उरस कपा-
ल्याती। तालु। जिह्वा। दंत। इनको स्पर्श कर जो
है अंगो में सिद्ध होताहै उसको षड्ज कहिते हैं।

चतुर्थः षड्ज इत्याहुः पंचमो धैवतोभवेत् षष्ठोनिषादोविज्ञेयः सप्तमः पंचमः स्मृतः ॥ ३ ॥
अथ सप्तस्वराणां लक्षणानि ॥ नासाकंठमुरस्तालुजिह्वादंतांश्च संस्पृशन् षड्भ्यः संजायते
यस्मात्तस्मात्षड्ज इति स्मृतः ॥ दामोदरस्त्वन्यथाह ॥ वायुः संमूर्छितो नाभेरुरोऽसौ हृदयस्प
र्शः पार्श्वयोर्मस्तकस्यापि षस्तो षड्जः प्रजायते ॥ ५ ॥ ५ ॥

दामोदर जीने और लक्षण भी कहाहै सो लक्षण
भी नाभी में वायुः से मूर्छित हो कर ह्रदयको स्प
र्श करे दोनो पार्श्वो में भी अर नाडों में भी मस्तक

र॰सं॰
३८

अब ऋषभका प्रकार कहिते है। नाभि मूलतें नाद
वर्ग उठकर ध्वनिकों करे ऋषभ जो बैल उसकी
न्याई स्वभाविक वैसा हि बोले सो ऋषभ स्वर हो
ताहै ६। अब गंधार को वर्णन करते हैं। नाभी दे

नाभिमूलान्नादवर्गाउत्थितः कुरुतेध्वनिम् ऋषभस्येवनिर्यातिर्हेलयाऋषभः स्वनः। ६
नाभेरुत्थघतेवायुर्गलेश्रोत्रेचचालयन् सशब्देयेननिर्यातिगंधारस्तेनजायते॥ ७ ॥

शतें वायु गल श्रोत्र क्या कान इनकों चालनक
र शब्दकरे सो गंधार संज्ञक होताहै। ७। अब।
मध्यम का वर्णन कहिते है। मध्यम स्वर शरीर

38

३६ सामरेगपनि ३७ मसारेगपनि ३८ मरेसापग
नि ३९ रेमसापगनि ४० रेसामपगनि ४१ सारेम
पगनि ४२ पमसारेगनि ४३ मपसारेगनि ४४
मसापरेगनि ४५ सामपरेगनि ४६ सापमरेग
नि ४७ मपसारेगनि ४८ गपसामरेनि ४९ प
गसामरेनि ५० पसागमरेनि ५१ सापगमरेनि ५२
सागमपरेनि ५३ मसागपरेनि ५४ मगसाप
रेनि ५५ पमसागरेनि ५६ इति संगीतकल्पद्रुमे।

ग०सं० मि भाग में जावे फिर ऊर्ड भाग में दोनों तक प
३५ ऊंचे धावन कर दोनों में बोले सो धैवत स्वर हो
जाता है। १०। अब निषाद का वर्णन कहिते हैं।

गत्वानाभेरधोभागं वस्तिंप्राप्योर्द्धगः पुनः धावन्निव च यो याति कंठदेशं स धैवतः। १०।
षड्जादयः षडेते च स्वराः सर्वे मनोहराः निषीदंति यतो लोके निषादस्तेन कथ्यते। ११।
अथ ब्राह्मणस्य स्वराभ्यासे वक्ष्यता माह॥ मंत्रहीनः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्या प्रयुक्तो न तन्
मर्थमाह स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतो पराधात् ॥ १ ॥

षड्ज थी आद लेकर जो छे स्वर हैं सो जिस में
स्थिरता को प्राप्त होवें सो निषाद स्वर होता है
११। इतने कारणों में इनके यह सात नाम होगये

अब नारदीय पुराण में येह लिखा है । जैसे ब्रा-
ह्मण को नित्य नैमित्तिक संध्या तर्पण देवा-
र्चन वेदपाठ होम करणा योग्य है इसी तरह-
विष्णुनारायण की प्रसन्नता वास्ते नृत्य क्या

अथाधिकारनिरूपणान्नारदीये । विष्णोर्नृत्यंचगीतंच नटनंचविशेषतः ।

नाचना गीत क्या विष्णुपद गायन करणे न
टन क्या वाद्य बीणादि मृदंगादि केसी छै-
ना इत्यादिक बजावने अथवा नटवत् प्रम-

१०. सं
धं

नता में पर्वों के दिनों में विचित्रता करणी क्या श्री
राम नवमी को तथा जन्माष्टमी को एकादशी
नृसिंहचतुर्दशी वामनद्वादशी शिवरात्रि तथा
दुर्गाष्टमी राधाष्टमी बसंतपंचमी कार्तिक माघ

ब्रह्मणब्राह्मणजातीनांकर्तव्यंनित्यकर्म्मवत् ५ ॥ भागवतेपि॰ ममपर्वानुमोदनम् ॥

चातुर्मास्य इत्यादिक पर्वों में मंदिरों का शृंगार।
करणा लेप झाड आदिकोंकी रोशनी करणी।
पात्र सेज पार्षद सफा करणे अर होली विजय

सर्वे देवताओंकी प्रीति होती से समस्तलोकोंको
ए अनंदवन मानता है ॥५॥

दशमी में स्वरूप बनाने जिस जिस अवतार का दिन होवे उसीका स्वरूप
बनाना क्या कारण है जो उस स्वरूप के देखने करके सबका लीन ली

अब नारद जी की शिक्षा के अनुसार स्वर थी
बिना वेदपाठ भी उलटा विघ्न कारक होता है।
जो मंत्र स्वर वर्ण थी हीन क्या झूठा स्वर कपोल
कल्पित लगाय कर कीया हो सो ऐसा बिम्हरा

विस्वरविप्रस्यवेदेंनधि
कारमाह्

अहीणःस्वरवर्णाभ्यांयोवैमंत्रःप्रयुज्यते यज्ञेषुयजमानस्यहरत्यायुःप्रजांपशून् ।२।
अतःकथितसमस्वरेषुब्राह्मणस्यावश्यमधिकारः ब्रह्मवेदस्तमजानतःविप्रब्रह्मत्वंनास्ति स्व

ब्राह्मण यजमान कों मारदेता है जैसें इंद्र के
शत्रु की उत्पत्ति करणेंसी त्वष्टा ऋषीने इस।
वास्ते होम करणे में स्वर अशुद्ध लगाया था।

र॰ मं॰
ध॰

घा तो विपरीत फल हो गया का इंद्र के हाथ
में वृत्रा स्वर मारा गया यजमान को योग्य है।
स्वर में वेदपाठी की परीक्षा अच्छी तरह में क
र लेणी तब मंत्र उच्चारण कराणा इस वास्ते ब्रा

स्वरशास्त्रानभ्यासेन वेदोपि न शुद्धो भवेदतः प्रथमतो वेदाधिकारिणो वटुकस्य स्वराभ्या
सः कारयितव्यः र ब्राह्मणो वा स्वदेवार्थं गायमानोऽशिपरं न व वर्षसहस्राणि कुवेरभवेन व मेत् ष

ह्मण को अवश्य स्वर के सीखने का अधिकार है
स्वर नहीं जानता हो तो वेद पाठ यथार्थ नहीं
होता अर वेद न जानता हो तो ब्राह्मणता सिद्ध

नहीं होती वेदके प्रभाव करके इसी वास्ते अवश्य
सीखणा चाहीये ।३। अब ब्राह्मण कों सभ धर्म ।
में येह उत्तम धर्म है जो वासुदेव जी के आगे गा
यन करना इस गायन में नौ हजार वर्ष पर्यंत

इतिसालिग्रामार्चनचन्द्रिकायां ॥ अथस्वरलक्षणमाह ॥ स्वरोयः क्वचित्स्थानेस्वरोऽदयो
जकः किंवाओरमतोयस्मादुच्चरितितः स्वराः ५। केनेस्वराइत्याह ॥

कुबेरके भवन में रहेगा। येह सालिग्राम पूजन।
चंद्रिका में फल लिखा है ।४। अब स्वर क्या वस्तु
है। उत्तर जो स्वरता के एक स्थान पर खडी हो ।

ग॰ सं॰
९२

कर हृदय को रंजन करे सो स्वर होताहै अथवा
जो सुनने वाले के मनको रंग देवें क्या प्रसन्न
कर देवे वो स्वर होताहै। ५। अब षड्जादि स्वरों
के देवता आदिक कथन करता हैं। खड्जका ब

(अथस्वरलक्षणमाह)। खड्जर्षभौ च विज्ञेयौ गांधारो मध्यमस्ततः पंचमो धैवतश्चाथ निषा-
दश्चेति क्रमात् तेषां संज्ञा च सारेगमपधानि निगद्यते ॥ ९ ॥

हला देवता अनुष्टुप्छंदः विप्रजाति मयूरषाद्व
न जंबूद्वीप निवास स्थान श्वेतवस्त्र हाथमें पद्म
है अर वाहन इसको ब्रह्मा है अर वार सरता हैं दे

व कुल में उत्पन्न हुवा है अर पद्मवर्णा है इसका स्था
न इसके बोलनेका कल्पद्रुम में कंठ लिखा है।
येह षड्ज का प्रकार है। अब ऋषभ प्रकार कहि
ते है। ऋषभका सूर्य देवता है अर गायत्री छंद है
त्री वर्णा है वाचक स्वरवत शब्द है प्लक्षद्वीप में
निवासस्थान है रक्त वस्त्र है खड्ग हाथमें है अ
श्ववाहन है ऋषि कुल में उत्पन्न हुवा है तीन च
इसकीयां श्रुती है अर मस्तक में बोलता है। इति

रा.सं. ऋषभः। अथगंधारः। गंधारका अग्नि देवता है श्रो
४२ व त्रिष्टुप छंदहै और वैश्यवर्ण है छाग स्वरवत् है
शाल्मली द्वीप निवासस्थान है रक्तवस्त्र है धनुष
हाथमें है अरु देवकुल में उत्पन्न हुवाहै रसवानहै
रौद्री अरु क्रोधा दो श्रुतिरता है इसकी ये स्वरवर्णः
है कंठ में बोलता है। इतिगंधारः। अथमध्यमः म
ध्यमका इंद्र देवताहै इसका बृहती छंदहै विप्र
वर्णहै क्रुंजवत् शब्दहै अरु देवकुल में उत्पन्नहुवा

है अर मद्गरु हाथमें है अर श्वेतवस्त्रहैं हाथीपरच
ढाहै अर कुंदवर्ण है अर इसकी चार स्वरता हैं अर
नाभा उर में बोलता है। इति मध्यमः। अथ पंचमः
अर पंचमका विश्वदेवता है अर पितृवंश में उत्पन्न

मद्गुरः स्वरूजमाख्याति ऋषभेवत्किचात्रिकः छागो गंधारमाचष्टे क्रौंचो वदति मध्यमम् ॥७॥

हुवा है अर कटार हाथमें है अर पालकीपर चढा है
उरमें बोलता है अर इसकी चारध स्वरता हैं। इति
पंचमः। अथ धैवतः। अर धैवतका नारद देवता॰

है उष्णिक छंद है पीतवर्ण है ऋषिजल में उत्पन्न हुवा है दादुरवत् स्वर है इसका शाकद्वीप में निवासस्थान है तृतीयवर्ण है अरु मसल शास्त्र है सिंहवाहन है अरु इसकी यो तीन ३ मूर्छना है। इति धैवतः ६

कोकिलापंचमंब्रूते भेकोवदति धैवतम् निषादंबृंहकरीवक्ति तेन द्वलादिसंमतम् ॥ ८ ॥

अथ निषादः अरु निषाद का रुद्र देवता है श्यामवर्ण है जगती छंद है अरु गंतम जल में उत्पन्न है अर वैश्यजाति है अरु लाल वस्त्र है महिष वाहन है त्रि

मूलधारहै पुष्कर द्वीपमें निवासस्थान है गजवा
न शब्दहै दोनों में बोलताहै अर दो २३ सकीया
श्रुतियांहैं अर श्रुतियों का प्रकार सब पीछे क
ह दीयाहै।७।८। अब सात स्वरों की जाति वर्णन करता

अथ जातिमाह॥ शुद्धाः स्वर्जातयः सप्तताः षड्जादिस्वरनामिकाः नाम्नैव विकृतास्त्वात्रसं
कीर्णामिलिताभिधा॥ सं॥ ९ ॥

है सो तीन प्रकार की जातीहै। शुद्धा १ विकृता २
संकीर्णा ३ प्रथम जो सप्त स्वर आपनी आपनी ह
रता में काइम है उनकी शुद्ध जाति संज्ञाहै॥ जैसे कथनक

र०म०
५५

रीदी है जैसें षाड्जा।१। आर्षभी।२। गांधारी।३। मध्य
मा।४। पंचमी।५। धैवती।६। नैषादी।७। येह सात स
बैंकी शुद्ध जाती है। अब यारो विकृति जाति कहते
हैं। निबंधांतर ग्रंथ के अनुसार में। षड्जकैशिकी १

तत्रशुद्धाः। षाड्जार्षभीचगांधारीमध्यमीपंचमीतथा धैवतीचाथनैषादीसप्तैताःशुद्धजातयः ॥ १० ॥

षड्जमध्यमा।२। गांधारपंचमी।३। आंध्री।४। षड्जोदी
च्यवती।५। कर्मारवी।६। नंदयंति।७। गांधारोदीच्यवा
।८। मध्यमोदीच्यवा।९। रक्तगांधारी।१०। कैशिकी ११

येह याहां प्रकार की विकृति जाती भरता दिकोंने
कथन करीहै। अब इनके हेतु का कारण कथ-
न करते हैं।।११।।१२।।१३।। षड्ज अर गंधार के योग

स्यात्षाड्जकौशिकी षड्जमध्यमा च ततः परम्‌ गंधारपंचमी चोध्री षड्जोदीच्यवती तथा।।
कर्म्मारवी नंदयंती गंधारोदीच्यवापि च मध्यमोदीच्यवा रक्तगांधारी कौशिक्यपि।।१२।। एवमे
कादश प्रोक्ता विकृता भरतादिभिः शुद्धाभिर्विकृतानामथ हेतून्ब्रूमहे १३ षड्जगंधा
रिकायोगाज्जायते षड्जकौशिकी षड्जकामध्यमाभ्यां तु जायते षड्जमध्यमा।। १४ ।।

में कौशिकी षड्ज होतीहै अर षड्ज मध्यम के सं
योग में षड्ज मध्यमा जाती होतीहै अर गंधार पंच
म योग में गंधार पंचमी जाती होतीहै अर गंधार

रा॰ सं॰ ऋषभम संयोग में आंध्री जाती होतीहै अर षड्ज गं

४५ धारके संयोग में धेवती भी होती है षड्जो दीच्य निष्क्रितहोतव

45 वती जाती होतीहै ।५। कर्मारवी जाती नैषादी पं

गंधारीपंचमीभ्यांतुजातागंधारपंचमी गंधारार्षभकाभ्यांतुजातिरांध्रीप्रजायते १५ षाड्जीगं
धारीकानष्ठवैवतैर्मिश्रिताखिमाः षड्जोदीच्यवतीजातीकुर्युः कर्मारवीपुनः १६ उत्पादय
तिनैषादीपंचम्यार्षभिकापिच नंदयंतीतुगांधारीपंचम्यार्षभिकान्विता १७ गंधारीधैवतीषा
ड्जामध्यमेतियुताखिमाः गंधारोदीच्यवांकुर्युर्मध्यमोदीच्यवांपुनः ॥ १८ ॥

चमी आर्षभी में यह तीन होतीहै नंदयंती पंचमी ।
आर्षभी गंधारी में होतीहै गंधारी धेवती षाड्जी म
ध्यमा इन में गंधारो दीच्यवा तथा मध्यमो दीच्यवा हो

तीहैं पह जो गंधारी अरु धैवती अरु मध्यमा तीनः
जाती शुद्ध हैं अरु नैषादी धैवती बिगैर षाड्जी जा
ती षों बिगैर पंचम के साथ रक्तगंधारी जाती कों

एताः एव विना षाड्ज्या पंचम्या सह कुर्वते एताः गांधारी धैवती मध्यमाः कुर्युः रक्तगांधारी नै
षादीन च धैवती नागांधारीमध्यमापंचमी आर्षभी धैवतीं त्यक्त्वा पंचम्यः कौशिकी भवेत् पं
चम्यः षाड्जी गांधारी मध्यमा पंचमी नैषादीभ्यः ॥ १९ ॥ अथ सांग्रामसंबंधमाह ॥ षाड्ज्या
र्षभी धैवती च नैषादी षड्जकौशिकी षड्जोदीच्यवती चैव षड्जमध्या न याः पराः ॥ २० ॥

करतीयां हैं अरु गंधारी मध्यमा पंचमी येह तीनों आ
र्षभी धैवती कों त्याग कर पंच जाती कर कौशिकी
जाती होती हैं ॥१४॥१५॥१६॥१७॥१८॥१९॥ अरु इन जाती

कों सिद्ध करती

रा·सं·
५६

46

यौंका ग्राम मेवेय कहता है। षड्जा· आर्षभी· धैवती
नैषादी· षड्जकौशिकी· षड्जोदीच्यवती· षड्ज-
मध्या· येह सात जातीयां हैं षड्ज ग्राम में उत्पन्न हो

षड्जग्रामोद्भवाः सप्तजातयः कीर्तिताः बुधैः गंधारीरक्तगंधारीमध्यमोदीच्यवा पुनः २१ गंधार-
पंचमीचैव गंधारोदीच्यवा पुनः पंचमीचैव गांधारी पंचम्यांध्रीतथैव च २२ नंदयंतितथाकर्मा-
रवीचान्याचकैशिकी इत्येकादश विज्ञेया जातयो मध्यमोद्भवः २३ एवमष्टादशानोहिजा-
तीनांसंभवः स्मृतः ॥

तीयां है। अर गंधारी १ रक्तगंधारी २ मध्यमोदीच्यवा
३। गंधारपंचमी।४। गंधारोदीच्यवा।५। आंध्री।६। गां-
धारी।७। पंचमी।८। नंदयंती।९। कर्मारवी।१०। कैशि

की ।११। येह यारे प्रकारकी जातीयो मध्यम ग्राममें
उत्पन्न होतीयो है ।२०।२१।२२।२३। अर दोनों ग्रामों
कीयो अष्टदश कया अठारे जातीयो हैं इनही जाती
यो में सब राग भिन्न भिन्न दिखाई देते हैं । अब
इनकी संज्ञा संगीत प्रकाश के मत में कहता हूं ।
अर प्रथम सात स्वरोंका नाम सम्यक होताहे जब
षड्ज मध्यम पंचम की चार चार ४ स्रुत्ता होन अ
र धैवत ऋषभ की तीन तीन ३ स्रुत्ता होन अर ।

ग्रं॰स ५७ गंधार निषाद की दो दो हरता होन तब सप्तस्वरों
की शुद्ध स्वर संज्ञा होतीहै और बारे विकृत ऐसे
होतेहै जैसे षड्ज स्वर की [illegible] एक श्रुती ऋषभ उ
47 तर जावे तब षड्ज की च्युत संज्ञा होतीहै और ऋ
षभ की विकृत संज्ञा होतीहै और जब षड्ज की
दो श्रुतीयों निषाद लेवे तब निषाद काकली संज्ञा
वाला कहते हैं चार ४ श्रुती वाला हो जाताहै अ
र कौशिक गंधार मध्यम की एक श्रुती लेने से

तीन श्रुती वाला हुवा एक अंतरगांधार होताहै १
अर मध्यम की दो २ श्रुती लेने में चार ४ श्रुती
वाला हुवा इसको च्युतमध्यम कहिते है अर
च्युत उतरेका नामहै अर इस में कुछ १
चढे तो अच्युत कहते है अर एक श्रुती के उत
रने में कौशिक पंचम हुवा है अर मध्यम की
एक श्रुती लेने में पांच श्रुती वाला हुवा है २
अर जो शुद्ध पंचम है सोई अच्युत पंचम भी इसी

रा॰ सं॰
४८

48

कों कहते हैं जब गंधार मध्यम की दो श्रुती।
कों लेवे तब पंचम कों च्युत कहते हैं यही
धैवत पंचम की एक श्रुति उतर नें सें चार
श्रुती वाला हुवा अब विकृत संज्ञा भी उसी
की होई। येह संगीत प्रकाश ग्रंथ के मत में
सात ७ शुद्ध स्वर अर बारे १२ विकृत येह।
सभ १९ उन्नी होये। अब गीता वली में येह
कहा है। स ऋषभ उतरा ऋषभ चडा गंधा

र उतरा गंधार चडा मध्यम उतरा मध्यम च
डा पंचम धैवत उतरा धैवत चडा निषद उ
तरा निषाद चडा । येह बारो विकृत कहे हैं ।
अथ मूर्छना प्रकार कहिते है । अब जिस जगा

अथमूर्छनालक्षणंसंगीतनारायणे ॥ यत्रस्वरोमूर्छितएवरागतोग्रामस्यतामाहु
रतस्यमूर्छनां ग्रामोद्भवास्ततस्वरसप्तयुक्तास्तानाभवेयुः पुनरेकविंशतिः ।२४।

स्वरही मूर्छित हो जावे रागके स्वरूप के अनु
सार सो तीन ग्रामों के सात सात स्वरों की इकी
स मूर्छना कहिलाती हैं ।२४। अब जो क्रम ।

रा० म०
४९

49

सप्त स्वरोंका है उसी क्रममें जब षड्ज स्वर क्र-
मस तक पहुंच कर अपने स्थान पर जा ठहरे
तब उस को मूर्छना कहते हैं मूर्छना दो २ ती-
न ३ चार ४ स्वरकी भी होती हैं येह मूर्छना ए-

क्रमात्स्वराणां सप्तानामारोहश्चावरोहणम् सा मूर्छेत्युच्यते ग्रामस्थाएताः सप्त सप्त च ।
॥ २५ ॥

क एक ग्राम में सात सात होती हैं तो इक्कीस २१
हैं उनके नाम येह हैं प्रथम ललिता १ मध्य-
मा २ चित्रा ३ रोहिणी ४ मतंगजा ५ सौविरी ६

छंदमध्या ७ पंचमा ८ मत्सरी ९ मृदुमध्या १०
सुद्धा ११ अन्ता १२ पलावती १३ तीव्रा १४ रौ
द्रा १५ ब्राह्मी १६ वैस्नवी १७ खेदरी १८ सुरा १५
नादावती २० बिसाना २१। अब जो स्वर अति

सरेगमपधानित्यारोहीकथिताबुधैः नीधपमगरेसात्वावरोहीतिनिगद्यते २६

शीघ्रता में दूसरे स्वर तक आरोही गती में पौ
च कर आजावे उस को विक्षेप कहिते हैं इ
सी को अवरोही गति होने में अक्षेप कहिते हैं २५

ग.म.
५.

एक एक ग्राम में सात सात मूर्छना होती है प
हिली दूसरी तीसरी चौथी पांचवी छठी सात
वी येह सात स्वरों विषे सातही मूर्छना रहिती

50

यां हैं। अब मूर्छना का दूसरा प्रकार कहिते

सैवं वा मूर्छनास्युस्त्रप्रतिग्रामेप्रतिष्ठिताः आदिद्वित्रिचतुःपंचषट्सप्तस्वरपितामताः २७
षड्जान्निषादपर्यंतंनिषादाद्धैवतान्तकम् धैवतात्पंचमान्तंतुपंचमान्मध्यमांतिकम् २८

जयपु

ग्रवरोहिक्रम में

हैं। षड्ज्यी लयके निषाद पर्यंत अरु निषाद।

धैवततक

यी धैवत यी पंचम तक पंचम यी मध्यम तक
गंधार यी मध्यम तक गंधार यी ऋषभ तक

ऋषभ थी खड्ज तक येह षड्ज ग्राम कीयां मू
र्छना हैं। अब इनका उदा हरण। सारेगमप
धनि। नीसारेगमपध। धनिसरेगमप। इ
ति षड्ज मूर्छनाः। अब मध्यम ग्राम की मू

गंधारांतेमध्यमान्स्यात् गंधाराद्दृषभांतकम् ऋषभान्सांतमित्याद्यः षड्जग्रामस्य मूर्छनाः २९
अथोच्यंते पुरोयायमध्यमग्राममूर्छनाः माद्यांते गाद्वृषभान्तमृषभात्सान्तमिष्यते। ३०

र्छना कहेते हैं। मध्यम थी गंधार तक अब गंधा
र थी ऋषभ तक ऋषभथी सात क्या षड्ज।
तक षड्ज थी दूसरे षड्ज तक निषाद थी ये

र.मं. वत तक धैवत यीं निषाद तक पंचम यीं मध्य।
५१ म तक। अथोदाहरणम्। मपधनिसऋग। ग
मपधनसाऋ। ऋगमपधनिस। सऋगमपध।
निसानीसऋगमपध। धपमगरेसानि। पधनि

सान्तान्ते नैषैवतान्तेपान्चमन्तेपान्तुमान्तिकम् गंधारस्वरव्रुपपञ्चकनयानोक्ताः श्रीरामा
यणटीकायांमूर्छनानां चतुर्दशविधत्वमुक्तं तत्र गांधारग्राममूर्छनानामग्रहणादितिवेदितव्यम्

सऋगम। इति मध्यम ग्राम मूर्छना। अब जो
श्री रामायण की टीका में चौदा १४ मूर्छना।
लिखी हैं सो जो गंधार ग्राम है सो स्वर्ग में है ए

थिवी पर युक्त नही है इसी वासते उसकीयो मूर्छ

ना नही कन करीयो है। अर सरिगमपधनि।

येह खड्ज ग्रामकी मूर्छना है। अर मपधनि

सरिग। येह मध्यम ग्रामकी मूर्छना है अर ग

अथोदाहरणम्। सरिगमपधनीति षड्जग्रामस्य मूर्छना मपधनिसरिगेति मध्यमग्रामस्य मूर्छना गमपधनिसरीति गांधारग्राममूर्छना।३२। इति मूर्छनाप्रकारः ॥

मपधनिसरि। येह तीसरे गंधार ग्रामकी मूर्छ

ना है। इन मूर्छनों का येह फल है शास्त्र में लि

खा है जो प्रथम शिवजी के आगे मूर्छन लगा

रा. सं. ५२

52

वे सो ब्रह्महत्या वाला भी हो तोभी उसकी ब
ह्महत्या दूर हो जातीहै इस में मूर्छन के भेद
कों अच्छे उस्ताद से सिखना योग्यहै अब इत
नीयो भी वर्तने में मुश्किल हैं और संगीतद

एतत्प्रयोजनमाह। शिवाग्रे मूर्छनां कृत्वा ब्रह्महापि प्रमुच्यते। स्थाय्यारोह्यवरोही च संचारीति
वर्णविधः आरोहि वृषभो वाक्किल्यावरोही च केसरी। ३३ ॥ ॥ ३३ ॥

र्पण में दो २ लक्ष बियासी ८२ हजार दो सौ २००
चालीस ४० गिनती रखी है। अब स्वर वर्णके चा
र भेद हैं। स्थायी। १। आरोही। २। अवरोही। ३। सं

चारी ।४। और आरोही बैलबोलता है अवरोही
सिंह बोलता है प्रथम जिस वर्ण स्वर मिश्रि
त पर वार वार स्थिरता हो सो वर्ण स्थायी ।
संज्ञक होताहै अर स्वर मिश्रित जिन वर्णोंकी

प्रत्येकलक्षणमाह । स्थायंस्थायंप्रयोगःस्यात्एकस्यैवस्वरस्यचेत् स्थायीवर्णःसविज्ञेयः
परावन्वर्थसंज्ञको ॥ अथ आरोहावरोहीसंज्ञकौस्वरौएतत्संमिश्रणाद्वर्णः संचारीतिनिगद्यते

ऊर्ध्व गती हो उनको आरोही अर अनुलोम क
हिते है अर जिनकी नीच गती हो उनको अव
रोही अर विलोम कथन करते हैं दोनों को मि

रा०सं०
५३

श्रित करणे में संचारी होती है स्थायी वर्ण छ्त्ती
बी २६ हैं आरोही अवरोही संचारी इनके बारे
१२ भेद हैं। ३५। अब इन स्वरों को वादी विवा
दी अनुवादी संवादी येह चार ४ संज्ञा कहिते।

वर्णाभवेन्त्यलंकारास्तानगानविशेषत स्तत्रचषड्विंशतिः स्थायिनः स्वरोहिणोद्वादशै
वत संचारिणोद्वादशैवनथाचैवावरोहिणः ३५ अनुवादीचसंवादीवादीचविवादकृत।

हैं जब खर्ज स्वर जिनों जिनो रागों में वादी होई
तब मध्यम अर पंचम उसके संवादी होते हैं।
अर ऋषभ गंधार धैवत निषाद येह चारो ४

53

अनुवादी होतेहैं अर उसका विवादी स्वर कोई।
नहीं है। अर निषाद जो है सो जबका किली
मेंजा वाला हो तब षड्ज अर निषाद आपस
में विवादी होतेहैं अर जिनो रागो में वादी स्वर

सेत्तासप्तस्वराणांहिक्रमशःकथिताबुधैः॥३६॥

ऋषभ होई तब उसका धैवत स्वर संवादी हो॥
अर गंधार जो है सो विवादी होताहै अर मध्य
म पंचम निषाद षड्ज येह चारों ध अनुवादी

र॰म॰ ५४

54

होतेहैं अर जब गंधार जिनों रागों में वादी होय

तब निषाद उसका संवादी होताहै अर ऋषभस

र विवादी होताहै अर मध्यम पंचम धैवत षड्ज।

येह चारो अनुवादी होतेहै अर मध्यम जो स्वर है

जिन्हो रागों में वादी हो उनका निषाद संवादी।

होताहै अर षड्ज भी संवादी होताहै अर पंचम।

धैवत ऋषभ गंधार येह चारों अनुवादी होतेहैं

अर इसका विवादी स्वर कोई नहीं है। जब गं

यार ग्रेतर संज्ञा वाला होवे तब मध्यम ग्रर गो॰
यार आपसमें विवादी होतेहै ग्रर पंचम स्वरजो
है जिनों जिनों रागों में वादी होइ तब उसका ष
ड्ज संवादी होताहै ग्रर ऋषभ गंधार मध्यम

यस्माडुत्पद्यते रागो सच वादीति कथ्यते यस्मात्संशोभते रागो संवादीति निरूपितः ।३७।

धैवत निषाद येह पांचों स्वर अनुवादी होतेहैं
ग्रर विवादी कोइ नहीं जब धैवत स्वर जिनों॰
जिनों रागों में वादी हो तब उसका ऋषभ सं

रा॰म॰ ५५

55

वादी होताहै अर निषाद उसका विवादी होता है
अर षड्ज गंधार मध्यम पंचम येह चारों अनु
वादी होतेहै निषाद स्वर जो है जिनों जिनों रा
गों में वादी हो तब उसका गंधार संवादी होताहै

यःस्वरोसमभागस्यासोनुवादीभवेद्रुवम् येनरागोभवेद्भ्रष्टोविवादीशत्रुवत्स्मृतः ॥ २८ ॥

अर मध्यम भी संवादी होताहै अर धैवत विवादी
होताहै षड्ज ऋषभ पंचम येह तीनों अनुवादी
होताहै येह संज्ञा संगीत प्रकाश के मतसें कही

हैं । अब दर्पण के मतमें संज्ञा कथन करताहूं
अब जिस स्वरतें राग चलता है उसकी संज्ञा
वादी है और जिस स्वर करके अति शोभित
राग होवे उसकी संवादी संज्ञा है । ३७ । अब
जिसके लगाये सेमता सो राग रहै न सोरे
अरु न बिगाडे सो अनुवादी होताहै अरु जिस
के लगा[illegible] में राग बिगाड जावे सो शत्रुकी न्या
ई [illegible]वादी होताहै । ३८ । जिन दोनो स्वरों का

र॰स॰ अंतर बारा स्वरना का वा आठ स्वरना का हो उनकी
५८ संवादी संज्ञा आपसमें होती है गंधार अर निषा
56 द उनको ऋषभहै अर धैवत येह चारो आपस

स्वरयोरंतरंयद्वै श्रुतीनांद्वादशाष्टयुक् संवादिनौस्वरौतौज्ञेयौ परस्पर
मितिश्रुतम् गंधारोयोनिषादश्चतथोतौधैवतोऽपिच यथापरस्परं
संज्ञा विवादीतिनिरूपिता। ८॥

में विवादी होतेहैं येह निरूपण कराहै रागा वा
ख्योंने॰ अब सात स्वरके समूहका नाम सप्तक
है सो तीन सप्तकका प्रकारकाहै प्रथमनिम्न

जिसको भाषामें उदारा कहा नीचेका सप्तक १ दूस
रा मुदारा कहा मध्य सप्तक २ तीसरा तारा कहा उ
चा सप्तक येह तीन सप्तक हैं सप्तक तो बहुत।

अथसप्तकनिरूपणम्। निम्नसप्तकः प्रथमः १ मध्यसप्तको द्वितीयः २
उच्चसप्तकस्तृतीयः ३। स्वराणारोहणे किंचिन्नीचाख्योऽप्युच्यते वीणा
दावपिनीचस्थ तस्मान्नीचतमोऽपि च। ८।

भी हैं जैसे अंगरेजी पियाना बाजा अरु कायणावी
णा इनसे बहुत सप्तक निकलतेहैं परंतु कंठ।
में ढाई सप्तकही बराबर होतेहैं इसीवास्ते गा

रा॰स॰ नेके छाई समक येहहैं। सा रे गा म प ध नि॰२ सा

५८ रे गा म प ध नि॰२ सा रे गा म प ३॥ एक २ स्वरके

57 सात सात भेदहै जैसें तीव्र १ अतितीव्र २ तीव्रत

म ३ मध्यमे शुद्धस्वर ४ अह कोमल ५ अतिको

मध्येशुद्धस्वरः एवमवरोहणं किंचित्कोमलेपरि चलतेनतनोतिकोमलेः

स्वनंसकारी [illegible] ततः परम॥८॥

मल ६ सकारी ७ इनकी तरीकीब येहहै जो थोडी

सी मीड यत किंचित स्वरका चडना उसको तीव्र

कहतेहैं उससें ज्यादाको अति तीव्र कहिते हैं २

र सें भी ज्यादा हो तब उसको तीव्रतम कहिते हैं
अह मध्यमें शुद्धस्वर रहता है और इसी प्रकार अव
रोही के क्रमसें जो पिछले स्वरपर ठहरे अंगुली
एक और दूसरी मध्यमा अंगुली में जब अगले स्व
र कों छोड़ दे तो उसका नाम कोमल कहिते हैं
ऐसे ही कोमल इससें पिछाड़ी लगे तो अतिकोम
ल इससें भी कम हो तो सहकारी कहिते हैं • अब
वर्णों का लक्षण कहिते हैं जो स्वर और गुण अर

क्रिया इनके आरंभ करके जो युक्त अक्षर होउस
की वर्ण संज्ञा है सो च्यार प्रकार का पीछे कहिदी
या है स्थायी· आरोही· अवरोही· संचारी· येह।

अथ वर्णमाह॥ स्वरोगणक्रियारंभप्रयुक्तो वर्ण उच्यते। स्थाय्यारोह्यवरो
ही च संचारीति चतुर्विधः॥ इति वर्णलक्षणम्। अथालंकारप्रयोजनमाह।
स्वरज्ञाने हृछाभ्यासो भक्तिलाभश्च जायते वर्णगानविचित्रत्वमलंकारप्र
योजनम् इति प्रसिद्धालंकारा एकषष्टिः प्रकीर्तिताः अलंकारचंद्रिकाया मताः॥

च्यार प्रकार का वर्ण है अब अलंकार का लक्षण स्व
र के ज्ञान में जो हृछ अभ्यास में ऐसा स्वर श्रेष्ठ लागे जि
स्वर में राग शोभित होना वे प्रकट प्रतीति देवे वर्ण

की अर गान की विचित्रता प्रतीति होवे जिसमें सो अलंकार होता है सो अलंकार एकसाठ हैं। अलंकार चंद्रिका ग्रंथ में सम कथन करे हैं इस ग्रंथ में विस्तार के भय सें अर उनका प्रयोजन।

राग में भी कम है इसवास्ते नहीं कथन करे॥
कुछक कहे भी है

अथगमकलक्षणम्

लघु डौरू के शब्द सम जो मनका गलेका
बोले उसको गमक कहिते हैं येह गम-
क चतुर्दश प्रकारका है गमक के चौथे
अंश वरीक गलके मनके कों तिरिपक
हैं १ इनके तीजे अंश कों स्फुरित वा उरु-
प कहै हैं २ और इनके आधे अंशकों कं-
प गमक कहै हैं ३ इससे भी लघु हो तो
आंदोलित गमक होता है ४ बडी शीघ्र

र॰स॰
५८

58
2

तासें चक्र घाकर जो होवे उसको वलित
गमक कहिते हैं और तीन स्थान जो स्वर
का विश्राम करता जावे वोह त्रिभिन्न गम
क होता है ६ अब जो वलित कहा है सो
ई अति सहल गंथि कर एक होता जाय
सोई कोमल कंठसें हो तो कुरल संत्तिक
गमक होता है ७ अगले स्वरको लगा-
कर जो पिछले स्वर पर आता रहे सो आ

यत होता है ८ अगले अगले स्वरकों जो आ
रोहि क्रम सें चडता जावे सो उल्लासित मे
लिक होताहै ९ जो स्वत प्रमाण मनका॰
कंपित होता जाइ सो झंकार मेंभी अक्ष॰
अति सुंदर हो तो झंकृत मेलिक होता॰
है १० अर जो स्वरकों भेद कर गमकहो
सो खंडित होताहै ११ और जो स्वरन कों
कोमल लिफाने में नामित संज्ञा होता

है १२ और जिस गमक में बहु नरी होई
सो मिश्रित संज्ञिक होता है १३ और जो
अभ्यास थी विना जिसकी स्वतःध्वनि में
रागगमक दीषे सो शारीरक संज्ञक
होता है १४ ॥ इति चतुर्दश गमक ल
क्षणम ॥ ❖ ॥

अब जो स्वर का कम्पन है अर्थात् कंबना उसकों के
पन अरु गमकं लावंत लोक कहिते हैं और वेदशा
स्त्र में उसको कम्प कहिते है। अथ स्वरालंकाराः।
सरेगमपधनि· इति आरोहि· नीधपमगरेसा· इति
अथ कंपमाह॥ स्वरस्य कंपनं कंपः गमकोपि च कथ्यते इति॥ ❧ ॥
अवरोही· अब स्वरों का मिश्र साधन· सारेसा·१ सा
रेगरेसा २ सारेगमगरेसा ३ सारेगमपमगरेसा ४
सारेगमपधपमगरेसा ५ सारेगमपधनिधपम
गरेसा ६ सारेगमपधनिसानिधपमगरेसा·७ इत्या

रा.स. रोही. अथावरोही. सानीसा १ सानिधनीसा २ सा
५५ नीधपधनिसा ३ सानिधपमपधनिसा ४ सानि
५९ धपमगमपधनिसा ५ सानिधपमगरे गमपध
निसा ६ सानिधपमगरेसा. रेगमपधनिसा ७ इति
मिश्रसाधनम्।। सारेसा १ सारेगसा २ सारेगमसा ३
सारेगमपासा ४ सारेगमपधसा ५ सारेगमपध
निसा ६ सारेगमपधनीसा ७ इसी क्रमसें अवरो
ही जाननी।। अथान्यप्रकार।। सारेग १ रेगम २

गमप ३ मपध ४ पधनि ५ धनिसा ६ सानिध नि

धप धपम पमग मगरे गरेसा । अथान्यत । सारे

सारेग १ रेगरेगमा २ गमगमपा ३ मपमपध ४

धपधपनि ५ धनिधनिसा ६ सानिसानिध नीध

नीधप धपधपम पमपमग मगमगरे गरेगरेसा

अथान्यत । सारेसारेगरेगरेग १ रेगरेगमगमग

म २ गमगमपामपामपा ३ मपमपधपधपधपधः ४

पधपधनीधनी[ध]नि ५ धनिधनिसानिसानिसा ६

स॰ म॰
६०

60

सानिसानिधनिधानिध १ निधनिधपधपधपधप २
धपधपधपमपमपम ३ पमपमगमगमग ४ मगम
गरेगरेगरे ५ गरेगरेसारेसारेसा ६ ससस रेरेरेग
रेरेरेग १ रेरेरे गगगम गगगम २ गगग ममम प
ममम प ३ ममम पपप ध पपप ध ४ पपप धधध
नि धधध नि ५ धधध निनिनि सा निनिनि सा ६
ससस निनिनि ध निनिनि ध १ निनिनि धधध।
प धधध प २ धधध पपप म पपप म ३ पपप॰

६॰

ममम गा मममम गा ४ ममम गागागा रे गागागा रे ५

गागागा रेरेरे सा रेरेरे सा ६। सारे सारे गा १ रेगा रेगा

म २ गाम गाम प ३ मप मप ध ४ पध पध नि ५

धनि धनि सा ६। सानि सानि ध १ निध निध

प २ धप धप मा ३ पम पम गा ४ मग मग रे ५

गरे गरे सा ६। अथान्यत्। सारेग सारेगम १

रेगम रेगमप २ गमप गमपध ३ मपधम

पधनि ४ पधनि पधनि सा ५ सानिध सानि

रा॰म॰ धप ३। निधप निधपम २ धपम धपमग ३ प

६१ मग पमगरे ४ मगरे मगरेसा ५। अथान्यतः

61 सारेग सारेग सारेगम १ रेगम रेगम रेगमप २

गमप गमप गमपध ३ मपध मपध मपधनी ४

पधनि पधनि पधनिसा ५। सानिध सानिध

सानिध प १ निधप निधप निधपम २ धपम

धपम धपमग ३ पमग पमग पमगरे ४ म

गरे मगरे मगरेसा ५ अथान्यतः सासारेसारे १ ६१

रेरेगारेग २ गागामगाम ३ ममपमपा ४ पपधपध ५
धधनिधनि ६ निनिसानिसा ७ ससनिसानि १
निनिधनिध २ धधपाधप ३ पपमापम ४ मम
गमग ५ गागरेगरे ६ रेरेसारेसा ७ अथान्यत॥
सासारे १ रेरेग २ गागम ३ ममपा ४ पपध ५
धधनि निनिसा ७ सासानि १ निनिध २ धध-
प ३ पपम ४ ममग ५ गागरे ६ रेरेसा ७ अथा-
न्यत॥ सासारेरेग १ रेरेगगम २ गागममपा ३

र०सं० ६२

62

मम पपध ४ पपधधधनि ५ धधधनिनिसा ६ म
मनिनिध १ निनिधधप २ धधधपपम ३ पपम
मग ४ ममगगरे ५ गगरेरेसा ६ अथान्यत्सं॰
सासा निनि धप १ निनिधध पम २ पप ममगरे ३
गगरेरे सासा ४। सासा रेरे गम १ रेरे गग मप २
मम पप धनि ३ धध निनि सासा ४। अथान्त
र। सासा रेरेरे गम १ रेरे गगग मप २ गगमम
म पध ३ मम पपप धनि ४ पप धधध निस ५ ६२

सासा निनिनि धप १ निनि धधध पम २ धधप
पप मग ३ पप ममम गरे ४ मम गगग रेसा ५
अथान्यत प्रस्तारः। सा १ सारे १ रेसा २ सारेग १
गरेसा २ रेसाग ३ गसारे ४ सागरे ५ रेगसा ६।
सारेगम १ रेसागम २ मसारेग ३ साmरेग ४ ग
मसारे ५ मगसारे ६ रेगमसा ७ गरेमसा ८ ग
सारेम ९ रेगसाग १० सागरेम ११ मरेसाग १२
सागमरे १३ सामरेग १४ मरेगसा १५ रेमगसा १६

रेगसाम १७ गरेसाम १८ सारेमग १९ रेसामग २०
मसागरे २१ सामगरे २२ मरेसाग २३ मगरेसा २४
येहू च्यार स्वरका प्रस्तार। अब पांच स्वरका प्रस्ता
र॥ सारेगमपा १ रेसागमपा २ सागरेमपा ३ ग
सारेमपा ४ रेगसामपा ५ गरेसामपा ६ सारेम
गपा ७ रेसामगपा ८ सामरेगपा ९ मसारेगपा १०
रेमसागपा ११ मरेसागपा १२ सागमरेपा १३ ग
सामरेपा १४ सामगरेपा १५ मसागरेपा १६ ग

मसारेपा १७ मगासारेपा १८ रेगामसापा १९ गारेम
सापा २० रेमगासापा २१ मरेगामपा २२ गामरेमपा २३
मगारेसप २४ गापमरेसा २५ रेसामगापा २६ गासा
रेमपा २७ रेगासपमा २८ गारेसपमा २९ मगारेप॰
मा ३० सागामपरे ३१ मरेपसगा ३२ गासरेपम ३३
रेसागापमा ३४ गारेसापम ३५ रेसागापम ३६।
सारेपगाम ३७ रेसापगाम ३८ रेपमसगाम ३९ सागा
मरेपा ४० गसामरेपा ४१ मसगारेपा ४२ गामसा

ग.सं. रेपा ४३ सापमरेग ४४ पसामरेग ४५ मसाप
६४ रेग ४६ पसामगरे ४७ सापमगरे ४८ सागमरे
64 ग ४९ पगरेसाग ५० गरेपसाम ५१ रेपगसाम ५२
गपरेस-म ५३ रेगपसाम ५४ सापगरेम ५५ प
गसारेम ५६ गपसारेम ५७ गसापरेम ५८ पसा
गरेम ५९ गपमसारे ६० मपगसारे ६१ पगमस
रे ६२ गपसारेम ६३ मगपसारे ६४ सागमपरे ६५
मगसापरे ६६ गमसापरे ६७ ॥ इति पंचस्वरा ।
६६

णो प्रस्तारः अथ रिषभ प्रस्तारः ॥ सागपमनि
धरे १ गपमनिसाधरे २ पगमनिसाधरे ३ पम
गनिसाधरे ४ मपगनिसाधरे ५ मगपनिसा
धरे ६ गमपनिसाधरे ७ निगमपसाधरे ८ गनि
मपसाधरे ९ गमनिपसाधरे १० निमगपसाध
रे ११ पनिमगसाधरे १२ निपमगसाधरे १३ नि
मपगसाधरे १४ मनिपगसाधरे १५ मपनिग
साधरे १६ मपसागनिधरे १७ निगपमसाधरे १८

र·म·
६५

65

मनिसासामगाधरे १९ गापनिममसाधरे २० पगानीम
साधरे २२ निपगाममसाधरे २३ पनिसासामगाधरे २४
पसानिमगाधरे २५ निपसगामधरे २६ पगासानी
मधरे २७ रेममसानिपधरे २८ सागपानिमधरे २९
पगासानिमधरे ३० गपसानिमधरे ३१ निरेगाम
पसा ३२ रेनिगामपसाध ३३ निगारेमपसाध ३४
गानिरेमपसाध ३५ गारेनिमपसाध ३६ रेगानि
मपसाध ३७ मरेगानिपसाध ३८ गारेपनिपसा

य ३९ रेगमनिपसाय ४० गमनिरेपसाय ४१ गनि
मरेपसाय ४२ निगमरेपसाय ४३ मरेनिगपसा-
य ४४ मनिरेगपसाय ४५ धमनिरेगसाय ४६ म
धनिरेपसाय ४७ मनिधरेगसाय ४८ निमधरेग-
साय ४९ धनिमरेगसाय ५० रेधनिमगसाय ५१
धरेनिमगसाय ५२ धनिरेमगसाय ५३ निधरेम
गसाय ५४ निरेधमगसाय ५५ गरेनिमधसाय ५६
मनिरेमपसाय ५७ धनिरेमपसाय ५८ धनिरे

२॰ स॰ मधसाप ५८। इत्यादि॰ अथ मध्यमकीतान ॥ साप
६६ निधगरेम १ पसाधनिगरेम २ पनिसाधगरेम ३
निपसाधगरेम ४ निसापधगरेम ५ धसानिपग
रेम ६ साधनिपगरेम ७ पनिधसागरेम ८ पनिस
धगरेम ९ धनिसापगरेम १० धनिपसागरेम ११
धपनिसागरेम १२ निपधसागरेम १३ पनिधसा
गरेम १४ धसापनिगरेम १५ साधपनिगरेम १६
मपधनिगरेसा १७ पसाधनिगरेम १८ पधसानि ६६

गारेम १९ धपसानिगारेम २० साधसानिगारेम २१
पधसानिगारेम २२ मधसानिगारेप २३ पधनि
सागारेम २४ पधनिमगारेग २५ पसाधपगारेम २६
सापधरेगारेम २७ सानिपधगारेम २८ पनिम
धगारेम २९ सानिधपगारेम ३० धनिमपगारे
म ३१ मनिधपगारेम ३२ इत्यादि । अथ निषादः
सारेगामपधनि १ रेसापगामधनि २ रेपगासा
मधनि ३ गारेपसामधनि ४ गसारेमपधनि ५

67

सागरेपमधनि ६ परेसागमधनि ७ सामग
रेपधनि ८ सापगमरेधनि ९ गसापमरेधनि १०
गमपसारेधनि ११ मगसारेपधनि १२ रेमपग
साधनि १३ मरेपगसाधनि १४ मपगरेसाध
नि १५ मरेपगसाधनि १६ गरेपमसाधनि १७
रेगसामपधनि १८ सामरेगधपनि १९ मसारे
गपधनि २० मरेपसागधनि २१ रेमसागपध
नि २२ सारेपगमधनि २३ रेसापमगधनि २४

सापधरेमगानि २५ साधपरेमगानि २६ सारेपम
गाधनि २७ रेसापगामधनि २८ रेधपसामगानि २९
धरेपसामगानि ३० मधपरेसागानि ३१ मपधरे
सागानि ३२ धमपरेसागानि ३३ धरेपसामगानि ३४
रेधपसामगानि ३५ रेमपधसामगानि ३६ मरे
पसाधगानि ३७ सामपरेगाधनि ३८ मसापरेगा
धनि ३९ परेममसागाधनि ४० परेमसाधगानि ४१
रेमपसाधगानि ४२ सारेगामधपनि ४३ रेगाम

ग॰ स॰ पधनि(सा) ४४ धगमपमानि ४५ साधमरेपधनि ४६
६८ सारेमगपधनि ४७ सारेगमपधनि ४८ साधग
पमरेनि ४९ पमगरेधमानि ।५०। इत्यादि । अ
68 थान्यान्त ॥ सारेसा १ रेगारे २ गमगा ३ मपम ४
पधप ५ धनिध ६ निसानि ७ सानिसा ८ निध
नि ९ धपध १० पमप ११ मगम १२ गरेगा १३ रेसा
रे १४ सानिसा १५ ॥ इति संपूर्ण अलंकारः ॥
अथ औडव पंचम रिषभ वर्जित तान येह हैं ॥ ६८

सागमधनि १ गसामधनि २ मसागधनि ३ धस
गमनि ४ निसागमध ५ सामगधनि ६ गमसा
धनि ७ मगसाधनि ८ धसागमनि ९ साधगमनि १०
सागधमनि ११ गसाधमनि १२ सामधगनि १३
मसाधगनि १४ साधमगनि १५ मधसागनि १६
धमसागनि १७ मगसाधनि १८ गमसाधनि १९
धगमसानि २० मगसाधनि २१ धमगसानि २२
निसागमध २३ सानिगमध २४ मगनिसाध २५

ग॰स॰
६९

६९

निगसामय २६ सागनिमय २७ गसानिमय २८
सामनिगय २९ मसानिगय ३० निसागमय ३१
सानिगमय ३२ मनिसागय ३३ निमसागय ३४
गनिसमय ३५ मनिगसाय ३६ मगसानिय ३७
सामगनिय ३८ यनिसगम ३९ नियसागम ४०
सायनिगम ४१ यसानिगम ४२ निसायगम ४३
सानियगम ४४ गसायनिम ४५ यसागनिम ४६
सायगनिम ४७ गयसानिम ४८ यमसानिग ४९

सागनिधम ५० गसानिधम ५१ निसागमध ५२ सा
निगधम ५३ गानिसाधम ५४ निगधसाम ५५ ध
गनिसम ५६। इत्यादि। अथ पंचमवर्जित षाड
व तान॥ सारेगमधनि १ सागरेमधनि २ रेगस
मधनि ३ गरेसामधनि ४ गसारेमधनि ५ मसग
रेमधनि ६ मसागरेधनि ७ सागरेमधनि ८ स
गमरेधनि ९ गसामरेधनि १० गमसारेधनि ११
रेमगसाधनि १२ मगसारेधनि १३ मरेगसाधनि १४

१० म० मगरेसापनि १५ गमरेसापनि १६ गरेमसापनि १७
७० रेगसामपनि १८ सामरेगपनि १९ मसारेगपनि २०
70 मरेसागपनि २१ रेमसागपनि २२ रेसामगपनि २३
सारेमगपनि २४ पसारेमगनि २५ सापरेमगनि·
सापरेमगनि २६ सारेमपगनि २७ रेसापमगनि २८
रेपसामगनि २९ परेसामगनि ३० मपरेसाग
नि ३१ पमरेसामगनि ३२ परेमसागनि ३३ रे
पमसागनि ३४ रेमपसागनि ३५ मरेपसागनि ७०

३६ मामरेगयनि ३७ ममारेगयनि ३८ मरेमायग
नि ३९ रेममायगनि ४० रेमामयगनि ४१ मारेम
यगनि ४२ यममारेगनि ४३ मयमारेगनि ४४
ममायरेगनि ४५ मामयरेगनि ४६ मायमरेग
नि ४७ मयमारेगनि ४८ गयमामरेनि ४९ य
गमामरेनि ५० यमागमरेनि ५१ मायगमरेनि ५२
मागमयरेनि ५३ ममागयरेनि ५४ मगमाय
रेनि ५५ यममागरे त्रि ५६ इति संगीत कल्पद्रुमे।

रा॰स॰ ७१

अब तानका लक्षण कथन करताहै जो पूर्वोक्त
मूर्छना कथन करीहै वोही शुद्ध क्या यथार्थ
आरोही अवरोही क्रमसे युक्त होवे उसीको ता
न कहते है सो ताना अनेक असंख्यात कल्पड्

अथतानलक्षणम्। मूर्छनाएवतानाः स्युः शुद्धआरोहणाश्रिताः दामो
दरस्तु। विलार्थंतेप्रयोगार्थैः मूर्छनाशेषसंश्रयाः तानास्त्वेकोनपंचाशत्

म वाले कथन मात्र करीहैं परंतु रूप उनका कु
छु वर्णन नही करा अब नारायण के मतानुसा
र तानाधिकार ग्रंथमें पांच हजार तेतीस कथ ७१

चालीस

न करी हैं जिनमें उनंचास ताना हैं और उनहीं से कूट
तानों का भेद भी बन जाता है इनके भेद बहुत हैं परं
तु उनका वर्णन कौन करे किस लाई कथन करै·
ग्राम· मूर्छना· ताना· इनके भेद कथन कुछ करे
तेभ्य एव भवन्त्येकूटताना: पृथक्पृथक् सप्तानां स्वराणां सप्तसप्तभेदेनैको
नपंचाशत्ताना: एकस्वरस्य सप्तभेदा: पूर्वोक्ता:॥ अथ तानार्थ कारे। ताना: पंच
तो हैं परंतु अति कठिन हैं जितना प्रकार बुद्धि से प्र
तीत हुवा है उतना कह दीया है परंतु एक ऐसी ऐ
सी सूक्ष्माति सूक्ष्म तानों की हरकत है जो लिखने

मैं नहीं आती कों जो श्रेष्ट उस्ताद तंतकार हो उसके
वजाने कों देष देष अर उसकी प्रीति में पूछ पूछ
कर सफा करणीयां उनका यथार्थ ज्ञान वीणादि

वलाति प्राप्त
सहस्राणि वर्षाणि ऽवत्समी ग्रामिष्टोमिकनानेन शिवं स्तन्वा शिवो भवेत् मे
दावङ्तनास्तेषां कस्मात्कसेनुवत्माति ग्रामाणां मूर्छनानां च वहवोपितयाभिधाः
प्रकृतानुपयोगित्वादस्ते यत्नाच्च नेरिताः ग्रथच स्वस्नतरभेदज्ञानार्थं वीणामाह ॥
दारवी गात्रवीणा च द्वेवीणे गानजातिषु सामिकी गात्रवीणा स्यात् तस्याः स्यात्लक्षणं

तंत साजमें होता है इसवास्ते वीणा कहिते हैं सो वीणा
दो प्रकारकी है एक दारवी वीणा है अरु दूसरी गात्र
वीणा है अर्थात् येह शरीर भी वीणा रूपही है जिस

में सामवेदी और गायक लोक गायन करते हैं
जिसमें स्वर व्यंजन प्रकान्तर स्पष्ट निकसते हैं
और उनकी मुद्रा हाथ अंगुली अंगुष्ठादिक प्रत्य
त्तना के हेत वास्ते कल्पित करी है येह बात को

गात्रवीणातुसाप्रोक्तायस्यांगायंतिसामगाः स्वरव्यंजनसंयुक्ता अंगुल्यं
गुष्ठरंजिता ॥ गात्रवीणातुनाम्नायंशरीरामस्तमाह ॥ पंचभूतसमुद्भूतंपृथ्वी· म

ई कोई वेदपाठी लोग जानते होंगे गायक लोग
तो जिस जगा ऊंची स्वर लगाते हैं उसके साथ
हाथ को भी ऊंची मुद्रा दिखावते हैं अथवा नीची

रा॰सं॰ स्वर पर नीचे हाथ मुद्रा लेजाते हैं अब शारीरक।
७३ व्यवहार कथन करते हैं ७८ शरीर दो प्रकार का
73 है एक तो पंचभूतात्मक पृथ्वी जल अग्नि वायु
आकाश पंचीकरण में बना हुवा है और दूसरा।

कृतसु[illegible] शरीरेंद्रियविषयेशोकें वाह्यमभ्यंतरे यथा मनोबुद्धिरहंकारः।
प्राणास्तु लेंद्रियाणि च अपंचीकृतभूतोत्थं सूक्ष्मं दुःखादिसाधनम् ॥ ८ ॥

अपंचीकृतभूत लिंग शरीर अभ्यंतर में है सो अपंची
कृत भूत ऐसे होते हैं ७६ जो पृथ्वी मानो मेरुभर
थी उसमें अष्टमांश अष्टमांश और तत्वों जलादि
७३

अद्वैतेर दृष्टी
रहीथी फिर से २ म

को से रला और उनको उतनाहि अंश पृथवी में
रला इसतरे सभी पंचीकृतभूत संज्ञक होते हैं
अर येही पांच अमिश्रित होन तो अपंचीकृत हो
ते हैं इनहीसें लिंग शरीर वनताहै अरु जैसे मन

अथषट्चक्राणि ॥ आधारेतुयच्चक्रं चतुर्दलसमन्वितम् लिंगमूले
तथाप्रोक्तं षट्पत्रंचक्रमुत्तमम् नाभिदेशेदशाराख्यंद्वादशारंहृदिस्थितम्॰

अहंकार प्राणपांच सूक्ष्म इंद्रिय जो स्वप्न में देषते
सुनते सूंघनादि करते हैं येही लिंग शरीर सुख
दुःखको भोगताहै पारलौकिक ऐहिक सुकृत॰

उत्कृत फल वासना सें बांधा हूवा भोगता है अब गात्र·
वीणा की स्वरना दिकों के वास्ते षट् चक्र कथन ।
करते हैं जैसें गुदाधार चक्र चार पत्र का है और
इसके आस पास वाले नाडीयें भासते हैं के दलिया

षोड़शारे तु कंठस्थे श्रुति स्वर समाश्रयम् । द्विपत्रं कूर्चदेशस्थं पत्रदेवः श्रुति
इति । प्राणवायुं समाश्रित्य आरोहत्यवरोहति चंचलो नटवज्जीवः स भ्रमणानि ॥ दि॰ शा॰ टि॰

के नाम और अनेक हैं असंख्यान और अस्थियां·
शरीर में बहुत हैं परन्तु इस संगीत में उनका प्र
योजन कम है हृदय कोसें चक्र विशेष ति पसलीयों

लिंग मूलमें अधिष्ठान चक्र षट दलहै और ना
भिदेशमें दशदल कमलहै हृदय में द्वादशार अ
नाहत नाम चक्रहै षोडश दल चक्र कंठमें है
जहां स्वरना स्वरादि प्रकट श्रवण कीये जाते हैं

इडावामेस्थितानाडी दक्षिणेपिंगलातथा हृदिनाडीसुषुम्णा च ब्रह्मरंध्रा
वधिस्थिता तन्मार्गेहंसरूपेणनाड्याः षट्वामेदक्षिणेचषट ॥ ८ ॥

उनका आश्रयहै और भ्रुवोंके मध्यस्थान दोपत्र
वाला चक्रहै अरु संगीत दर्पणमें तीन पत्र इस
के कहेहैं येह छे चक्रहैं परंतु दर्पणमें और ह

रा॰म॰ हठप्रदीपकादि योग ग्रंथोंमें नव चक्रभी कहेहैं ता
७५ ल चक्र ब्रह्मरंध्र आकाश चक्र येह तीन चक्र।
अधिकहैं अब नेत्रों के मध्य चक्रमें जीवात्मा
रहिता है येह तिलक उसका पूजनहै वोही।
जीव प्राणवायुमें मिलकर ह्रिदयसें ब्रह्मरंध्र
तक सुषुमणाके रस्ते नटकी न्याईं चडता उत
रता रहिताहै अरु सुषुमणा के वाम पासे इडाना
डीहै और दक्षिण पासे पिंगला नाडीहै औरजो

सुषुमणा नाडी कही है सो आधारथी लेकर ब्रह्म
रंध्र पर्यंत विस्तृत है वोही परंपराका मार्ग है
योगाभ्यासी लोक इसको जानते हैं और सुषुमणा
के आस पास बारे नाडीयो मुख्य हैं छे दक्षिण

असंख्याताधमनानाड्यः शरीरेविस्तृताबहु तथाष्टौनिवहन्यत्र चक्राविंश
तिसंख्यया हृद्देशेचप्रधानानि यत्रजीवःप्रतिष्ठितः। स्वरमाह श्रीमद्भागवते

और छे बाम और अनेक है असंख्यात और अस्थि
यो शरीर में बहुत हैं परंतु इस संगीतमें उनका
प्रयोजन कम है हृदयकी यो चक्राविंशति पर

र०सं० लीये हैं उनही मध्यमें जीवके निवासका स्थान
७८ है येही जीव स्वर रूपी चलै है। अह श्रीमद्भागव
7.6 त में लिखा है सोई येह जीव है विवर प्रसूती अ क्यावदूचक्र
र्थात हृदाकाश दशाअंगुली मात्र पुलाङ् सोई

मध्यषजीवो विवरप्रसूतिः प्राणेन घोषेण गुहां प्रविष्टः मनोमयं सूक्ष्ममुपे
त्यरूपं मात्रा स्वरो वर्ण इति स्थविष्टः स्थानमाह। अकारहविसर्जनीयानेकेवदः १

है प्रसूति जिसकी क्या प्रकट आवने जानेका॥
स्थान सो प्राणवायु में मिला होया जो अनहदना
द को कर रहा है वोही जव स्थूल होनेकी इच्छा॥ ७८
कहि लाता है वेही परा शक्तिका रूप है फिर पश्यंति होती है फिर मध्यमा। फिर वैखरी सोइ कहिते हं

करता है तब मन रूप अर्थात संकल्प सूक्ष्मरूप
हो कर मात्रा होती है वोही फिर विशेष होकर
स्वर होता है फिर वर्ण होकर कंठ में वाणी रूप
प्रकट होता है सोइ स्वर रूपी ब्रह्म कंठ में आन

१ उरःस्थानोतालु २ कण्ठुरषाणांमूर्द्धा ३ लृतुलसानांदन्ताः ४ उप
पध्मानीयानामोष्ठौ ५ अमङ.णणानांनासिका च ६ ...नासिकोऽना

कर पृथक पृथक वर्णों कों उत्पन्न करता है जैसें
प्रथम पृथक्क स्वर १ दूसरा पृथक्क प्रयत्न २
तीसरा पृथक्क काल ३ इन कारणों सें अनेक

उसका तीन प्रकार का प्रयत्न है

र॰ सं॰ भेद होजाते हैं सो कहिते हैं अरु व्याकरण शास्त्रम
७७ तानुसार अकाविगयङ॰ ह॰ विसर्ग अरु इनका॰
कंठ स्थान है १ इ॰ चछजझञ यश॰ इनका ता
लु स्थान है २ ऋ॰ टठडढण ष इनका मस्तक स्था
न है ३ लृ॰ तथदधन लस दांत इनका स्थान है
४ उ॰ पफबभम ःप ःफ इनका ओष्ठ स्थान
है जो ओष्ठ ध्रुवपदादि होते हैं वोह इनही से बना३
जाते हैं और निरोष्ठ में ये अंतर नहीं होते और

ञमङणना इनका स्थान नासिका हैं अरु अर्द्धबिंद
युक्ताक्षर और संपूर्ण बिंदु युक्त तिनका मुखना
सिक स्थान है जैसें कं कों इत्यादि जिह्वा मूल में
भी एक बोलता है तिनकों जिह्वामूलीय कहिते

जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम् ॥ अथ च हठप्रदीपिकादौ शरीरे नवचक्रा
णि ॥ आधारचक्रम् १ धिष्ठानचक्रम् २ नाभिचक्रम् ३ हृदयचक्रम् ४ ॥

है हकार अंतस्थो में अर्थात बिंदु में युक्त हो उसका
उरस्थान भी है इत्यादि॰ अथ स्वर पृथक्त्व उदात्त
अ अनुदात्त अ स्वरित अ अथ काल पृथक्त्व।

य. सं. ७८

अ ह्रस्व अर्द्ध सेकंड मात्र कालमें बोलना है। और
दीर्घ आ पूर्ण सेकंड में बोलना है। आः प्लुत दो
सेकंड में बोलना है येह बातभी एक निदर्शन
मात्रहै। अब योगाभ्यास के ग्रंथो में शरीर में न
व चक्र कहेहैं प्रथम आधार चक्र गुदा में है १
और दूसरा अधिष्ठाना चक्र लिंगमें है २ तीसरा
नाभि चक्रभी है ३ चौथा हृदय चक्रहै ४ पंच
मा कंठ चक्रहै ५ छठेमा तालु चक्रहै ६ सप्तमा ७८

78

ललाट मे चक्र है अठमा ब्रह्म रंध्र मे चक्र है नव
मा आकाश चक्र है ९ येह नव चक्र कहे हैं इ
न मैं जो दूसरा अधिष्ठान चक्र है तिस मैं स्वल्प त
र ध्वनि प्रथम होती है अर नाभी चक्र मैं उस मैं

आकाशचक्रं
कंठचक्रं ६ तालुचक्रं ७ ललाटचक्रं ८ ब्रह्मरंध्रचक्रं ९ ॥ अधिष्ठानेस्व
ल्पध्वनिर्जायते । ततोनाभावधिकाजायते ततहृदयदेशेमंद्रनामस्वरोजायते.

अधिक हो जाती है हृदय मैं स्वर बन कर मंद्र सं
ज्ञा उसकी होजाती है अर कंठ चक्र मैं मध्य संज्ञा
होती है अर कपाल मैं तार संज्ञा होती है इन ती

स्पातिलके बलसें

न ध्वनि के सप्तस्वर होजाते हैं जिनों का प्रकार उ
त्पत्ति स्थान कह दीया है। अब स्वर के शोधन का
प्रकार कहिता है। नित्य प्रति संगीत अभ्यासको
ब्राह्म मुहूर्त का दो घडी रात्रिशेष में जागना चा

नदर्हद्वे कंठचक्रे मध्यनामाध्वनिर्ज्ञायते नदर्हद्वे हृदयदेशे मंद्रनामाध्वनिर्जायते (जायते नदर्हद्वे) भवति। एभिः सप्तस्वराजायन्ते तेषां स्थानानि एवं निरूपितानि·
ललाटचक्रे तारनामध्वनि

हीये जयसे प्रातःकाल में पद्म प्रबुद्ध होता है तो
लक्ष्मी जो शोभा है उसका उसी में निवास होता
है और प्रथम शौचआदिकों से निवृत्त होकर शौ

पुरीषोत्सर्गादि·

व करणी चाहिये फिर पवित्र होकर दातन करनी
अर दातन करके धोती करणी इकीस हाथका।
लंबा वस्त्र मलमल पुषनी लैनी चार अंगुली चौ
ड़ी उसको जलमें धोय कर सफा करणा अर नचो

अथ स्वरशोधनप्रकारः ब्रह्ममुहूर्ते उत्सृष्टलज्जे निद्रामत्तेऽदिनः प्रातः पथ्ये
प्रबुद्धे हि अयनिश्री. ऊर्णाश्रयम्। काकजंघावचाऊषण पिप्पलीमधुसंयुता॰

ड़ना नहीं उसको खायलेना जलमें निगल लैना
अपने गज़ से देखकर फिर उसको खैच लैना बड़ी
सफाई से रोज इसी तराह करणे से स्वरको शोध

वैसेही तंती करणी

गा. सं. ना फिर तंबूरा लेकर उसकी स्वर करणी सरस्वती
८. के स्तोत्रकों पढ कर स्तोत्र भी आगे लिखेंगे तंबू
80 रेकी जो षडज है उसपर आपनी स्वरको ठहराना
नही मिले तो तंबूरेकी स्वर चडाय लयणी जिस
ठिकाने आपना षडज बोले उस ठिकाने करलय
णी अर चार घडी अथवा दो घडी तक अभ्यास
करणा अर काहल्या नही पीणा क्युंके एक ष
डज के शोधन से सभी स्वरोंका मार्ग शुद्ध होजा

नाहै जेकर कफ आदिको करके कंठ विगड़ा हो
नव स्वरके वाले औषधीका सेवन करणा सो औ
षधी येह है काक जंघा बूटी और वच कुठ पि
प्पली मखीर में गोली इनकी बनानी बेरके ब

सप्तरात्रिंवाप्रयोगात्स्वरं किन्नरवन्नृणाम् जातीपत्रपुनर्नवागयकर्णको
रेउकुष्ठवचा छेदीरविशतावरीसमहूतेहर्णमितेपारयेत् वातश्लेकफ ॥

राबर गोली करणी सप्त रात्रि तक उनका रस ले
ना एक एक गोली रोज रात्रके भोजनतें पीछे ।
पानी तो स्वर किन्नरों के सदृश होता है जेकर ॰

रा.सं. ८१

81

इस मैंभी नहीं अच्छा होवे तब इसका औषध क
रणा चंबेलीके पत्ते १ अर इटासिट २ गायापिप्पली
मघो ४ हरणोलीदीजउ ५ कुट ६ वरच ७ सूंठ ८
अच्छीशतावरी ९ इनको चूर्ण कर सम इनके

नाशने कृमिहरंदौर्गंध्यदरनाशनं वक्त्रस्यापिसमलदोषहरणं शुद्धस्वरो
जायते। इतिस्वरार्थमौषधम्॥ स्वरार्थनाशमाह। गरिष्ठे कोजिकं तैलपकः

इनमें रलाना अर रात्रिको चार मासे भर खाना
तो इनने गुण हैं इसके बादीको दूर करेगा और
कफका नाश करेगा अर कृमिको दूर करेगा।

मुखकी दुर्गंधकोंभी दूर करेगा मुखके जितने रो
गहै दंतोंकी पीडादिको सोभी हटेगी अर स्वरकि
वरों के सदृश हो जावेगी जब स्वरका अभ्यासक
रणे में सिर घुमजावे तब कालीमिरच खाय कर·
हुत गरम पीना जितना रुचे अब जिस पुरुषने
स्वरको शोधन करणा हो सो इतनी वस्तु नही
ग्रहण करे इक तो बोझ करणे वाली वस्तु हो
जैसें मइदा अर कचालू बासी रोटी इत्यादिक अ

ग॰सं॰ र कांजी वाला अचार अर तेलवाला अचार अर ते

८२ लका तलया होया अर दधि अर यद्यपि अच्छा अ

त्रभी हो तो भी बहुत नही खाय लेवे अर दिन॰

में बहुत नही शयन करे अर रात्रियों में बहुत॰

मात्स्नतष्णादपि बहुपानमतिस्वापं जागरं च विवर्जयेत् ॥ अथ गाने दूषणविचारः ॥ कृशकर्कशरूतेयाहि संकाकवत्स्वरम् सीत्कारं च यतिभ्रष्टं तालभ्रष्टं॰ येवच॥

जागरण नही करे त ब उसकी स्वर अच्छी रहे

गी अर इनकी सेवासे बिगड जाती है। अब गायन

में दूषणोका विचार कहते हैं जिसका स्वर शिथि

लहो अर जो केदार स्वर अर रुकवी स्वर अर विरसस्व
र नाकी स्वर कौवे के न्याई जो नाक में बोले अर सी
तकार जो जाडा लगे सरदी का तो स्वर को पिता है
पसी स्वर अर जिस गायन में यति भ्रष्ट होवे और

स्थानभ्रष्टे स्वराद्धीने तानहीने तु कंपितम् लयकालविहीने च वक्रासेनवय
नक्कनम् हृष्टुवं भवेद्दृष्टाप्रसारितमविनच दृढहृष्टेनवयद्गाने गायिकस्तवि वर्जितं ।।

जिस गान में ताल भ्रष्ट होवे जिसकी अस्थाई की समा
का अस्थान भ्रष्ट हो अर जो विस्वर गायन हो अर जो
तानसे हीन हो जो स्वर अपनी जगा से चलित हो

रा.सं. जो राग लयथी हीन होवे और जो समयथी विरोध
८३ गाया हो अर गायन में जो भाव डिगा करणा येह
83 सभ दूषण हैं अर जो गायन आकाशकों देषक
र कीया हो सेपूर्ण गान में जों ऊर्द्ध भाव रावे अ
र जो पृथ्वी कों देषकर गायन करता हो अर अ
धकों प्रसार कर गायन करता हो अर जो गाय
न दोनो के दसनें से हों अब गायक के संगीत नारा
यण के अनुसार लक्षण कहिते हों। जो भयसे

गावें संग संग के जिसके संदिग्ध पद होन और
जो शिर कंपा कर गावें अथवा गाने में सिर बहु
त मारे जो गाना गाना अगाडी बधता जाता हो गा
ने में उठ उठ कर गाता हो विस्वरा हो कर काक

भीतोऽव्यक्तपदः शिरोविचलितः काकस्वरो विस्वरान् संदष्टोष्ठरदो निमी
ल्लनयनो भ्रान्ताङ्गसंस्थलया गायन्वक्रगमः स्वराल्पबहुलः स्याद्रागसंमिश्रकः

वत स्वर लगाता हो और औष्ठों को दशन कर दो
नों को चस कर नेत्रों को मीट कर अर भाव को
विकृत कर गाता हो श्रोतों में जिसने आपने म

सं.सं. नसें जान लीया हो के येही स्वर ठीक है चाहे विक
८५ ड हो जो गायन करता करता स्वाव्कों डिंगा करे
84 सोभी दूषन है अर जिस पुरुष गाने वालेकी अल्प
स्वर क्या निर्बल स्वर बहुत लगे अर्थात कहीक

केपास्थानविधायकोविरमकस्त्रीयस्वरःसत्वरः संत्यजेवहवोदोषानोक्ताविः
स्वरशंकया ग्रंथांतरेभ्यस्तेयाश्रनुक्तागुणदूषकः ॥ ॐ ॥

हीं स्वर कोमल लगाना पडता है उसी तराह सेए
ण कोमल नहीं लगाने स्वर अपने स्थानपर बल
में ठहरता है निर्बल लगे तो दूषण होजाता है अर

जिस गायक में राग मिश्रित होजावे का प्रकीर्ण
यों विशेष भिन्न राग अपनी इच्छायों बिना प्रती-
ति देवे तोभी दूषण है जिन रागों से मिल कर
एक राग बनता है उसकी प्रकीर्ण संज्ञा है सो प्रकीर्ण
सभ के राग ध्यायमें वर्णन होंगे उसीका प्रकी
र्णहै तो दूषण नहींहै अब जो कंपहै उसका।
जिसको ज्ञान नहीं है जहां कंपन नहीं लगाना
तहांभी लगाना जावे तबभी दूषण होताहै अर

जिसका सुशक स्वर हो रसमयी रहित अर जिस
का कठोर स्वर हो इत्यादिक बहुत रागके रागी
यों में दूषण हैं परंतु ग्रंथ के विस्तार के भयसे।
वोह नहीं कथन कीये सो और ग्रंथों में देषलेने

अथ गुरुलक्षणम्। शान्तो विनोदयायुक्तो नानादेशयशोन्वितः स्वरताललय
ज्ञोच संगीते गुरुरुच्यते॥ अथ शिष्यः अद्दालः सत्यगुरु शान्तो दयामैत्रीयुक्तो सुधीः

जो जो गुणकों दूषण करणे वालीयां बातें हैं उन
कों त्यागकर गायन करणा चाहिये। अब इस
राग विद्या में गुरु जिसकों उस्ताद कहिते हैं। उ

सके लक्षण लिषते हैं शांत चित्त हो क्या जिसकों सि
षने वाला दो चार दस वेरी भी पूछे तो क्रोध नामाने
फिर दस देवे इसी वास्ते जो दया करे षागिर्द के ऊप
र अर उनकों भी वजा जानता हो अर चितन उनसे

भक्तोऽभिलाषीसेवोषीरागार्थेशिष्यउच्यते अभ्यासार्थेततोह्यनिप्रयोगार्थेतथैवम
ध्यमोशिष्याणामुपदेशार्थेकुर्याद्वृत्तिंविलेखितां ।। अथाशिक्षपरीक्षामाह ।।

खेर इनके वजाने में चतुर हो अर जिसका उस्ताद लो
क यश करते होन और रागकी स्वर अर ताल अर ल
य आदिक भेदों कों अच्छी रीतीसे जानता हो उसकों

संगीत सिखने में गुरु कहेते हैं अब गुरु कों योग्य है
अर शिष्य कों भी योग्य है जब अभ्यास करणा हो सि
खने के वास्ते तब द्रुत वृत्ति रखणी अर जब सुनाना
हो तब मध्यम वृत्ति में सुनाना अर जब सिखाना हो

अथ शिक्षपरीक्षामाह॥ नकरालोनलंबोष्ठो नचसर्वांगनासिकः गद्गदोबद्धजिह्वः
अप्रयोगान्वयमर्हति पंचविघ्नानगृह्णाति चेत्तालव्याधयेनरः ॥ ३ ॥

किसी कों तब विलंबित वृत्ति में रखना चाहिये। अ
थ शिक्षपरीक्षा। अब गुरों कों योग्य है जो शिक्ष की
प्रथम परीक्षा करणी जो इन दूषणों में रहित हो

अपने साध्यायों के साथ मित्रता रखे बुद्धि जिसकी चतुर हो अर गुरुभक्त हो
गुरों की तन मन धन से शुश्रूषा करता हो राग विद्याकी बड़ी अभिलाषा
वाला हो रागवास्ते उसको शिक्ष जानना॥ ३·टी· पं १

अब शिक्ष क्या शागिर्द जिसके लक्षण श्रद्धा वाला हो सत्य बोलने वाला हो शांत चित्त हो
क्या गुरु के कोप पर क्रोध नही करे दया वाला भी होवे दूसरे शागिर्दों को भी सिखने देवे

86

उसको शागिर्द बनाना जो विकराल नहो अर ले
बे जिसके ओष्ठ नहोन नाक में नबोलता हो अर घ
एला नान हो अर बहुत बाणी जिसकी बहुनहो।
अर पांचप्रकारका शिष्य विद्या नही ग्रहण करता

अलसारोगसंयुक्तायेषांचविस्तृतंमनः अल्पकण्ठयाधीतेनाधीतेगुरुसान्निध्ये
अभिनेनसभामध्येजारगर्भाइवस्त्रियः ॥ ॥

जो बड़ा क्रोधी हो अर जो आपने हठवाला हो अर जो
आलसी हो जिसके अभ्यंतर कुछ रोगहो अर जिनो
का मन अस्थिरहो बहुत कार्यों में जिनकी प्रीति

87

हो इत्यादिक इस विद्या कों ग्रहण नही करते इस
वास्ते उनों की प्रथम परीक्षा कर लयनी ॥ अब जो
अभिमानी पंडित पुस्तक के देषने मात्र से विद्या॰
राग की तरकीब कों समझ लेवे के मेरे को आगई
है तो वोह एसे है जैसें किसी मित्र का गर्भस्त्री कों
हो तो वोह सभा मे लज्जित होती है इसी तरे जिस
ने इस विद्या का गुरु न धारा हो अर स्वन स्वन के
अथवा पुस्तक देषकर इस विद्या कों सीषणा वा

है तो कभी नही आवेगी इस वास्ते अवश्य कर गुरों
कों धारणा चाहिये। अब प्रागीहै शिक्षा। इस वि
द्या के सिषने वाले कों जो जठर का अग्नि है उसकी
रक्षा करणी चाहीये ऐसा भोजन षावे जो विका

कौलेयाग्निंसदारक्षेदलीयादशनेहितम् जीर्णाहारःप्रबुद्धःसन्नुषसिब्रह्म
चिंतयेत्। त्रिफलालवणाख्येनभक्तयेच्छितकःसदा अग्निमेधाजननेषास्य

री न होवे रात्री कों थोड़ा षावे जब आहार जीर्ण हो
जावे जब प्रातःकाल जागे अर पवित्र होकर ब्र
ह्म का चिंतन करे॥ अर त्रिफला का सेवन कर

णा बाहीये शिलकों इसरीति सें जो हरड बहेडा
आमला इन तीनोंका हूर्ण करके सम भाग अरु ल
वण इसमें यथा योग्य पाना दातन आदिक शो
च करके पांच मासे नित्य गरम जल सें षाना इ
स सें जठराग्नि वृद्ध होताहै अरु बुद्धिभी वृद्ध होती
है अरु स्वर वर्णका उच्चारण भी स्पष्ट रहिता है
अरु जब स्वरका उच्चारण करणा होवे तब मंद्र
स्वर के क्रमसें चलना येही सभ शाषा वाल्या॥

88

की विधिहै और बहुत करकश और ऊंची स्वरमें न
ही गान करणा जिस में प्राणों का रोध होजावे प्रा
णके यत्न में जो स्वर निकलता है उसमें विस्वर
स्वर होजाता है और विगड जाता है इस वास्ते उत
ना स्वर लगाना जितना आनंद से लगे और शि
न की साहस न चाहीये ये विद्या अति कठिन है
इस वास्ते शनैः शनैः क्या सहज सहज से इत
ने करम होते है एक तो विद्या दूसरा यत्नादि से

पा॰ सं॰ ८५ चय अरु पर्वत का चढना जो पुरुष इनों में काहल
करे उसकों विघ्न होजाताहै अरु कार्य्य सिद्ध नहीं॰
89 होती देषना चाहीये जो कीटकादि सनै यात्रा श
नै शनै करता रहे तो हजारों योजन तक जापौंहुं

शनैर्विद्याशनैरर्थाःशनैरारोहत्पर्वतंशनैः शनैः२ध्वासवर्तेतयोजनानांपरंव्रजेत्॰
योजनानांसहस्त्रंतुशनैर्यातिपपीलिकाः अगच्छन्वैनतेयोपिपदमेकंनगछति॰

त जाताहै अरु जेकर सेकलों में पत होया गरुड
नचलै तो एक पद मात्रभी नही चलता अरु देषो
के अंजन नेत्रों में यत्किंचित् २ रोज पाने से क्षय हो

जाताहै अर इहा थोडी थोडी केरकौं निकालता
छेवलगा देताहै इसी तराह जो काहला नपवे सो
विद्यामैं प्रवीण होताहै इसी वास्ते पुरुषकों योग्य
जो ऽध्ययन क्या विद्याका अभ्यास अर दान अरनि

नभोजनविलंबीस्यान्नचनारीनिबंधनः सुदूरमपिविद्यार्थीव्रजेद्गरुडहंसवत्
अहेरिवगणाद्भीतःसौहित्यान्नरकादिव राक्षसीभ्यइवस्त्रीभ्यःसविद्यामधिगच्छति॥

त्य संध्यादिदेवपूजनोत कर्म इनथी बिगेर सूना
दिन नहीं जाने देवे। अर अभ्यासी कों भोजनमैं वि
लंबन करना चाहिये समैं के समैं खाना चाहीये।

ग॰ सं॰
५॰

90

अर किसे स्त्री के संग प्रीति का बंधन नही चाहीये।
अर कभी दूर यात्रा में भी जाना पडे तो गाउंके अर ह
सकी न्याई शीघ्र गुरों के पास चला आना अर शि
तकों चाहीये जो स्त्रीयों की उसंगति में वचे नार

नालसाः प्राप्नुवंत्यर्थान्नक्लीबा नाभिमानिनः नचलोकरवाद्भीताः नवैशश्वत्प्रती
क्षणाः यथाखनन्खनित्रेणभूतलेवारिविंदति एवंगुरुगतोंविद्यांशुश्रूषुरधिग च्छति॥

द शिक्षा में लिखा है स्त्री के गुणों ते डरता रहे जैसें
सर्पकी कोमलता अर सुंदरता में भूल्या होया स्प
र्श कर बैठे तो बचता नही एसें स्त्रीयों के स्वरूप।

५॰

कोमलादि गुणों में इरता रहै अर उनकी सहायता

में नरक की न्याई डरे अर शिष्य को एसे जाननाचा

हिये जैसें राक्षसी यां पुरुष को खाजाती हैं तैसें स्त्री

यां भी खाजाती यां हैं इनकी इसंगति में बुद्धिन

गुरुसुश्रूषया विद्या पुष्कलेन धनेन वा अथवा विद्यया विद्या वनर्थो ब्राल्लिसाधनम् ॥

सेवाविहीनविद्या यद्यपि मेधागुणैः समपयाति वंध्येव यौवनस्त्रीन न सा विद्या फली ॥

ष्ट होजाती है अर विद्या नहीं प्राप्त होती है अब जो आ

लसी पुरुष है अर जो क्लीव जिनका दिल मारा·

होया होवे अर जो अभिमानी हैं अर जो लोकों के

र॰सं॰ ५१ अपवाद में डरते रहिते हैं अर जो अवकाश कोई स
हाउजीते रहिते हैं इनको यह विद्या कभी नही आ
वती। येह शिष्यको समझना चाहीये जैसें कू
प निकालने वाला पुरुष पृथवी को षोदता षो
दता जल निकाल लेता है तैसें गुरों के अभ्यंतर में
जो विद्या है सो शिष्य अछी शुशूषा में निकाल ले
ता है। गुरों की बडी सेवा सें विद्या प्राप्त होती है अ
थवा सेवा नही करण होवे तब जितना गुरु प

दार्थ मांगते रहें उतनाही देनेसें भी विद्या आवती है
अथवा एक विद्या गुरांकों याद है और हमरी शिष्य
कोई कोंई और विद्या याद है तो उस विद्यासे भी विद्याकी
है ४ प्राप्ति होती परस्पर इच्छा होनेसें और चौथा साथ
न कोई नहीं है। अब सेवा जिसने किसे उस्तादकी
नहीं करी और उस्ताद से विद्या नहीं सीखी और बु
द्धि आपनी से सुन सुन कर कछु आगई हो तो वो
ह विद्या फली भूत नहीं होती जैसे स्त्री यवनी स

रूप भी होतो वेश्या होवे सेवनति उससे नहीं आम
होवे सो विना सेके जो विद्या हो तो ऐसी होती है
इसतें गुरोंकी ऐसी सेवा करणी चाहीये जिस
सें गदगद प्रसन्न होजावे तब विद्या सफल होती

अथ श्रोतारमाह ॥ एकाग्रचित्तो रसिको गुणज्ञो गायनप्रियः धनदाता सुधीर्भो
क्ता रागश्रोता प्रियंवदः ॥ ३॥

है। अब श्रोताके लक्षण कहिते अरु एकाग्र चित्तहो
जिसका चित्त छिन्न नही हो अरु रसिया रसके जान
ने वाला हो अरु गुणकी परीक्षा करजाननाहो अरु

राग जिसकों बडा पियाराहो अरु उधारहो धनकेदे
नेवालाहोवे बुद्धी जिसमें वडीहों अछ्छा षाना अरु अ
छ्छा पैहरना अछ्छा गंभीरहो उसकों रागका योग्यश्रो
ता जानना चाहीये। अब सरगामें लेकर मूर्छनता

श्रुतिमारभ्य जात्यंतं मया यत्समुदीरितम्। तत्सर्व्वं वीणास्वरतः किं विदुर्वैणिकं नवा॥
मतः उद्दिष्टनष्टप्रस्तारखंडमेरुप्रबंधेनपत् संगीतानुपयुक्तत्वान्नोक्तं न कौतु

न जाति पर्यंत मैंने सबका वर्णन करदियाहै सो।
वीना अथवा सितार आदिकमें मूर्छनादिकों की
यथार्थ ज्ञान होताहै सो करलेना अर जो उद्दिष्टनष्ट

रा॰सं॰ प्रस्ताव मेरु खावे इत्यादिक जो बाताहैं सो पुछनमा
९३ त्रकीये हैं एक कौतुक मात्र हैं कछु गाने बजाने में
93 इनकी जरूरत नही पडती इसवास्ते नही ग्रहण
कीयां और संगीत नारायण ग्रंथमें भी नही ग्रहण

कस्मात्कस्मात्किंकिंजातमित्याह॥ स्वरेभ्यो वायमभून्नीतेस्मामभ्यः समपद्यत यत्र
भ्योनतेनैभूद्दसाद्यायर्वंगाः स्वनाः॥ संप्रदायशुद्धिमाह ॥

कीये और जो जो प्रकार स्वरके हैं सो सभ कैह दिये हैं
केन्प्रं ग॰२ अब येह राग चार प्रकारका चार वेदमें ब्रह्माजीने उ
त्पन्न कीया सो जिस जिस वेदमें जो जो उत्पन्न हुवा।

सो कहिते हैं ऋग्वेद में वाद्यविद्या उत्पन्न होई अर सा
मवेद में गायन विद्या अर यजुर्वेद में नर्तन विद्या
होई अर इस सभ प्रकार के अथर्ववेद में उत्पन्न की
ये हैं। अब इस विद्या के संप्रदाय के चलाने वाले द

ब्रह्मेशनंदिभरतदुर्गानारदकोहलाः दशास्यवायुरम्भायाः संगीतस्य प्रका
शकाः ॥ अथ स्वर्गादूर्ध्वलोकस्य नौर्यत्रिकस्य भूलोकागमनमाह ॥ ❀ ॥

श तो संख्यामें और भी अनेक थे सो प्रथम ब्रह्माजी
अर शिवजी और नंदि भरतजी अर दुर्गाजी नार
दजी अरु कोहलजी अर रावणराजा वायुः रंभा

रा॰ सं॰
९४

94

थी लयकर अपसरा स्वर्गके गंधर्व अथम नारदजी
अर तुंबरुजी पृथवी पर मर्त्यलोक में इस विद्या।
कौं ग्रहण करते भये पीछे गोपीयोंने श्रीकृस्नजी
कौं प्रसन्न करणेवास्ते अनेक प्रकारके राग गावें

गोपीभिर्गीतमारब्धमेकैकंकृस्नसन्निधौ तेननानानिरागाणांसहस्राणिचषोड
श। रागेषुतेषुषट्त्रिंशद्रागाजगतिविश्रुताः कालक्रमेणनष्टापिद्वादशएवनदृश्यते॰

अर श्रीकृस्नचंद्रजीनेभी अनेक राग श्रीवृंदावनमें।
रासकी में तथा गोपीयों के साथ क्रीडामें गायन की
ये सोलाहजार सौं रागथे जिन में अब जगत में।

९४

छत्तीस राग प्रसिद्ध हैं और अप्रसिद्ध हैं अब राजा यु
धिष्ठिर के कनिष्ठ भ्राता अर्जुन ने स्वर्ग में सशरीर जा
कर उर्वशी अप्सरा से गाने राग सीखा अर विराट्
राजा के आगे गायन कीया इत्यादिक रीतीयों से स्व

के विहरन्ति ते सर्वे रागाः सन्तीति निश्चिते मेरोरुत्तरतः पूर्वे पश्चिमे दक्षिणे तथा
समुद्रकच्छे ये देशास्तत्रामीषां प्रचारिणः ॥

र्ग का परम भूषण राग पृथवी पर भी नायक लोगों
को प्राप्त हो गया अब तो उन रागों का भी ह्रास क्या
घट देया जाना दिन दिन प्रति प्रतीत जाता है अर

र॰सं॰ ९५

95

केतेक गुणिजन येह मानते हैं जो सभी रागहैं परं
तु वोह मेरु पर्वत के उत्तर पूर्व पश्चिम दक्षिण स
मुद्र के निकट कच्छ देशमें इनके जानने वाले हैं सा
रयों के जानने वाला एक गुणी तो कोई भी नहीं है
अर भिन्न भिन्न गुणी जनों को आवते हैं। अब जान
ना चाहीये जो रास क्रीडा के पीछे अनेक नायक
गुणी जन लोक गायन विद्यामें प्रवीण होये उन
में श्री वृंदावन में हरिदासजी नायक हुवे उनके

शित वैजूबावराजू ऊवे येह वात श्रवण की है ब
ह उस्तादों में जो उस समें दिल्ली में बादशाहों का रा
ज्य था जब बादशाहों का जोर होगया तब येह वे
द जन्य विद्या हिंदुओं में ऋषी लोकों की थी तभी म
सलमानों को भी प्राप्त होगई कैंक ब्राह्मण तथी श्रा
दिक भी मलेछ होगये इसी बाइस से जोजो विद्या
वाकर् व र्गों में थी वोह उनको प्राप्त होगई प्रथम वा
एक राजा राजाराम उजैन के थे उनको दिल्ली के बा

नाम

कैंक नायक राग वि
द्या के जानने वालों
को बादशाहों ने जब
दस्ती बाधन के लो
आदि को से म्लेछ कर
दीया जप से भा
स्कर पंडित को स्वरजे
खां ... सेन नाम
को चांद खां नाम त
रकर सजाती में रला

तन्नू मिश्र

रा॰सं॰ ९६ इशाह अकबरने जीता तो उन में पंडित तानूमिश्र
कौं छीनलीया अर तानसैंन [illegible] कों सरस्वतीकाव नामकरदिया 3 हैं
रथा इसी वास्ते उनका राग शक्तिमान था किसी
96
ककारण सें मलेछ होगये तव उनकी मलेछवृ
त्तिहो गई अर मिरासी लोक उनकी शुश्रूषा करणे
गेले तव बहुत सेवासें प्रसन्न होकर कहने लगे।
कुछ मांगो तो वोह मिरासी बोले हमारेकों येह
राग विद्या देवो तो आश्चर्य होकर चुप होगये फि

र विचार कर बोले तुमने कुछ और पदार्थ मांगा ना।
था येह तो योगाभ्यासीयों महात्मा लोकों की विद्या
है परंतु मैं प्रतिज्ञा कर चुका हों तो सिखा देता हों।
परंतु इस विद्या में याचना करोगे तो पूरी नही पडे
गी अर विद्या भी अनाहत होजावेगी क्युंके नीति में
येह लिखा है ॥ श्लोक ॥ तृणा लघु तरं तूलं तूला
दपि च याचकः वायुना किं न नीतोऽसौ मामयं या
चयिष्यति ॥ इसकी टीका। तृण में अर्कका तूल

वैपावु ठिव्या

रा॰ सं॰
५८
97

हलका होताहै उसमेंभी याचक हौला होताहै याच
नाके भयसे उसकों वायुभी नही ग्रहण करदा तो उ
न लोकोंने लालच सें मांगनेका प्रारंभ कीया तो वि
द्या अनाहत होगई तब जो मान्य पुरुष थे उनोंने इस
विद्या कों न ग्रहण कीया अर विद्या सातरो के ग्रह
ण में स्थिर रहिती है इस कारण सें अर येह विद्या मिरा
सीयोंने गुप्त राषी अर दिल में शागिर्दों कों भी नही
दसी अर जो जो उस्ताद थे वोह आपनी आपनी विद्या

अनाहत होगई।

के समेत सरगये इसते इस विद्याका ह्रास होताजाता
सी।। अब संवत १९३९ श्रावणशुदि १५ श्रीमज्जी।
मन्महाराधिराजाद्धिराट् पर्वतस्य जंबू नगर काश्मी
राधिपतिश्री १०८ महाराजा रणवीर सिंहजी परम
परीतक सर्वविद्या प्रवृद्धि कारक जीकी कृपासे इ
स ग्रंथका प्रारंभ हुवा अब इस ग्रंथका प्रयोजनक्या
है संगीतके तो आगेभी बहुत ग्रंथ हैं तो इसका उत्त
र येह है जेकर संगीतके ग्रंथ आगे हैं तो होन बेशक

र०सं०
५८
98

कोई ऊनता नहीं है जो इस विद्याके ग्राहक हैं वो हम्र
मर के सदृश रस लेने वाले हैं जैसें मालती के अने॰
क हूतं हैं सो सभहीका रस भ्रमरोंको प्रमाण है इसी
तरे कोई हानि नहीं है अर हमरा जो बालक हैं का

सेगीतेवहवोग्रंथाः सन्ति चेत्सन्तु कानतिः मालतिमधुनश्चापिमधुपानामनाह ॥
तम॰ बालानोक्लिष्टविषयेसम्यग्बोधोनजायते तदर्थंहिप्यनेवाणीमनुष्यानोहिये ॥ ८ ॥

अविद्वान हैं उनकों संस्कृत ग्रंथों में कुछ इस कठिन
विद्याका अभिप्राय नही मिलता इसवास्ते हमनें
उदू भाषामें टीका करी है अर जो बाल इस विद्याकी

यो कलावेनो कों नहीसी प्रतीत होती यो सो निर्यत्न।
प्रतीत होजायें गी यो केवल अक्षर मात्र पढने में इस
का प्रयोजन प्रतीत होगा अरजो मूल संस्कृत सो वि
द्वानों के वास्ते है॥ अब राग की प्राप्ति वास्ते जो नारदजी

अथरागप्रदश्लोकमाह।नारदउवाच॥नवार्कबिंबद्युतिमब्जलद्दलन्नाटंक केयूर
किरीटकंकणाम्।स्फुरत्क्वणन्नूपुररावरंजितांनमामिकोटीउम्बवीसरस्वतीम् ॥

ने उपासना करी थी उसका वर्णन करते हैं। प्रथम प्रा
तः स्नानादिकरके शिवको चाहीये जो सरस्वतीजी
का श्वेतवस्त्र गंध श्वेतपुष्पादि सामग्री से जल पूर्णघ

स० सं० टके ऊपर थालीमें यंत्र लिखकर पूजन करणा पीछे

५५ स्तोत्रपाठ करणा निश्चिन्त स्थान विषे मौनता सें किसे

99 पुरुष नाल बोलना नहीं अर ध्यान सरस्वतीजीका क

रणा कैसीहै सरस्वती नूतन जो सूर्यका बिंबहै उ

वंदे सदाहं कुलहंसरूढ़मे चलत्पदें चंचलचंद्रसंपुटे। निर्योतमुक्ताफलहारसंच यंपरंदधानोविमलेकरद्वये ॥ २॥ ॥

सका जो प्रकाशहै उसतें भी प्रचंड उत्कृष्टहै ताटंक

भूषण अर बुहंटू बाहूके भूषन अर करीट मुकुट अ

र कंकण काकडे येह सभ स्वर्ण मय भूषण मणियों

५५

में जडे होये अति प्रकाशित हैं जिसके और प्रकाशवा
ले शब्द भेद वाले जो नूपर हैं क्या घुंगरु उनके श
ब्द करके जो प्रमुदित है ऐसी सरस्वती जी को नम
स्कार है फिर कैसी है कोटी चंद्र जैसी जिसके मुख

वराभयेप्रफुल्लकवल्हकीयुते परेदधानोविमलेकरद्वये नमाम्यहंत्वांशुभरांसरस्वतीं
जगन्मयींब्रह्ममयींमनोहरां २ तरंगितंसौमसितांबरंपरे देहिस्वरज्ञानमतीवमे

की शोभा है १ फिर कैसी है श्री सरस्वती कलहंस क्या जि
न हंसों की पिंज और चरण रक्तवर्ण होन और शरी
र श्वेत होवे सो कलहंस होता है ऐसे हंस का उपम है

ऊर्द्ध चलना जिसके चलन विषे जो चलत्पद अर्थात्·
केवल चरण सरस्वती जीके जो शीघ्र चलनके हेत
वास्ते केवुपटमें लगाये हैं उनको मेरी प्र[illegible]णाम है
और फिर कैसी है सरस्वती निर्मल मोतियोंकी वीं

गले येनाहितीयोहिमवेयमतरे सर्वोपरिस्थापरिरागमंडले श्रीभगवानुवच॥
स्तोत्रेणाज्ञापरेहदिवे प्रातरुत्थायय: पठेत् नारदोक्तंसरस्वत्य: सर्वविद्यावान्भवेदिह ५

वीणा जो हाथमें धार रही है बड़ी प्रीतीसे ऐसी को न
मस्कार होवे।२। फेर सरस्वती जीको नमस्कार हो
वे जिसके एक हाथमें वल्लकी का बीणा धारण

की होई है अर हसरे हाथमें पुस्तक है अर तीसरे रेसे वि
द्याका वर दे रही है अर चौथे हाथमें अभय दे रही है अर
निर्मल हैं हाथ जिसके अर शुभफलके देनेवाली है
अर सेएगी जगत में व्याप्त हो रही है और ब्रह्मका स्वरू
प है साक्षात् अर स्वरमें व्याप्त होकर मनके हरणेवा
ली है ॥३॥ फिर कैसी है सरस्वती श्वेत रेशमके जो अ
ति सुंदर वस्त्र हैं तिन्हें आदिक करके युक्त श्रीगंगा
जीके तरंगाके सदृश जो धवल हैं तिनको धारनक

रा॰सं॰ र रहीहै ऐसे वर्णो वाली सरस्वति हे सर्वदेवतोंसें उ
९१ नकृष्टे मेरेकों स्वरकाज्ञान दानकर हे अत्यन्त मंग
101 ल स्वरूपे एसाज्ञान स्वरका मेरेको देवें जो मेरे सदृश
दूसरा होर न होवे हे अतरे तेरा अन्त कभी नहीहोत ता

इति श्रीराजकुलावतंसराजाधिराजश्रीमहाराजारणवीरसिंहकारितेरण
संगीतमहोदधौ वीररागसागरसमुच्चये काकारामकृते सरस्वतीस्तोत्रसंयुक्तस्वराध्यायः प्रथमः समाप्तः

सर्वदाकाल स्थिर रहिनी हैं अवनेरी कृपासें रागमंडल
में क्या रागोंके भेदमें अथवा रागी जो पुरुष हैं उनके
मे[illegible]लमें जयसें सभमें उत्तम होजावों तेसें कर श्रीमग

९१

वानुवाच। इतना स्तोत्र सखीयोंकों कथन करके श्री
कृष्णजी महात्म्य कहने लगे हे सखियो इस सरस्वती
के स्तोत्रकों जो उपासना सेयुक्त एजन कर पाठकरे
गा उसकी जितनी जड़ता है सो दूर होवेगी अर दिव्य
स्तोत्रहै अर प्रातःकाल इसका समयहै उसवेलेजो
इसके पाठकरे उसकों राग विद्याकी अर शास्त्रकी
भी प्राप्तिहोगी इसी इसे नारदजीकों राग प्राप्ति
होई अर इस विद्यावास्ते येही नारद जीने कथनक

गी॰सं॰ गाहै ॥ ❀ ॥ इति श्रीमच्छ्रीराजकुलावतंसश्रीमहारा
१०२ जा रणवीरसिंहकारिते [illegible] गोस्वामिकाका
107 राम कृते स्वराध्यायः टीका प्रथमः समाप्तः ॥ शुभं ॥ श्री रणवीर सिंह संगीत महोदधौ

संवत [illegible] लिखीतई

है [illegible] मल्ल ॥

ग्रं॰ १

॥ ❀ ॥

अतः परं तालाध्यायो भविष्यति